mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-348 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

19 दिसंबर 2024 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

बल्लेबाजी रैंकिंग में... @ पेज 7

मुंबई में बोट हादसा, नाव के मालिक ने नेवी पर लगाया आरोप

यात्रियों से भरी एक नाव पलटी, घटना में एक व्यक्ति की मौत की सूचना

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के प्रसिद्ध गेटवे ऑफ इंडिया के पास समुद्र में यात्रियों से भरी एक नाव पलट गई। इस घटना में एक व्यक्ति की मौत की सूचना अबतक सामने आई है। इस मामले में डूबे हुए नाव के मालिक राजेंद्र पड़ते का आरोप है कि नेवी की एक जहाज ने उनकी नाव को टक्कर मारी थी। उन्होंने कहा कि बोट में 84 लोग बैठ सकते हैं और 80 लोग बैठे हुए थे। औपचारिक तौर पर 80 यात्री और 5 क्रू मेंबर नाव पर सवार थे। वहीं बोट हादसे पर शिवसेना यूबीटी के नेता आदित्य ठाकरे ने इंडिया टीवी से बात करते हुए कहा कि उनकी मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से बातचीत हुई है। मुख्यमंत्री ने उन्हें बताया है कि अब तक 25 लोगों को रेस्क्यू कर लिया गया है। पहली प्राथमिकता लोगों को रेस्क्यू करना है। मैंने कहा है कि इस मामले में जांच होगी, लेकिन पहली प्राथमिकता लोगों की जान बचानी है।

वहीं नीलकमल बोट कैसे डूबी या समंदर के बीच यह हादसा कैसे हुआ और कैसे तुरंत लोगों की जान बचाई गई, इसपर उरण से भाजपा के स्थानीय विधायक महेश बालदी ने कहा कि करीबन साढ़े तीन बजे दोपहर में नीलकमल बोट मुंबई से उरण के एलीफेंटा के लिए निकली। समंदर के बीच रास्ते में नेवी की एक स्पीड बोट पेट्रोलिंग कर रही थी। पेट्रोलिंग बोट के चालक ने कंट्रोल खो दिया और यात्रियों से भरी नीलकमल नाव से टकरा गई। उन्होंने बताया कि जब यह हादसा हुआ तो मेरे मित्र अजय कोली जो दूसरी नाव में थे, उन्होंने तुरंत इस डूब रही नाव के पास अपनी नाव ले जाकर लगा दी और नीलकमल नाव में सवार यात्रियों की जान बचाई। इसलिए जनहानि कम हुई है। साथ ही अभी कुछ लोग मिसिंग हैं, जिन्हें ढूंढने का काम जारी है।

भाजपा के विधायक ने कहा कि मैंने सदन में यह मुद्दा उठाया था। मुख्यमंत्री ने पीड़ितों को हर संभव मदद देने की बात कही है। इस मामले में सरकार जांच करेगी और नेवी भी अपनी जांच करेगी।

संक्षिप्त समाचार

2025 में पूरे होंगे भारत-चीन संबंधों के 75 साल

- रिश्तों की नई गाथा लिखने को चीनी उपराष्ट्रपति हान झेंग से मिले डोभाल

बीजिंग (एजेंसी)। भारत और चीन के राजनयिक संबंधों के अगले साल 75 वर्ष पूरे हो जाएंगे। इससे पहले दोनों देशों ने अपने रिश्तों को सुधारने की नई पहल शुरू कर दी है। भारत-चीन सीमा पर शांति लाने से लेकर आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक प्रगति को प्रगाढ़ करने के लिए

दोनों देशों ने कड़ी प्रतिबद्धता जाहिर की है। इस कड़ी में भारत के विशेष प्रतिनिधि और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने चीन के उपराष्ट्रपति हान झेंग से बीजिंग में मुलाकात की। दोनों नेताओं ने भारत-चीन के संबंधों को मजबूत करने के मुद्दे पर चर्चा की। इस दौरान चीनी उपराष्ट्रपति हान झेंग ने कहा कि अगले साल चीन और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ है। ऐसे में दोनों देशों के नेताओं द्वारा हासिल की गई महत्वपूर्ण सहमति को दोनों पक्षों को की ओर से लागू करना चाहिए। साथ ही उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान की गति को बनाए रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि दोनों देशों को राजनीतिक पारस्परिक विश्वास विकसित करना चाहिए और धीरे-धीरे संस्थागत संवाद बहाल करना चाहिए।

पाकिस्तान में भी मदरसों को लेकर सरकार और मौलवी हुए आमने-सामने

इस्लामाबाद (एजेंसी)। मदरसों को लेकर पाकिस्तान में भी सरकार और मौलवियों के बीच ठन गई है। पाकिस्तान के मौलवियों ने सरकार को यह स्पष्ट कर दिया है कि उनके मदरसे सरकार के प्रभाव से मुक्त रहेंगे और सरकारी विभाग का हिस्सा नहीं बनेंगे। एक तरह से उन्होंने सीधे तौर पर सरकार को चुनौती दे दी है। यह मौलवियों द्वारा 2019 में अपनाए गए रुख से विपरीत है। क्योंकि विभिन्न पारंपरिक मदरसा बोर्ड ने 2019

में संघीय शिक्षा मंत्रालय को कुछ नियंत्रण सौंपने पर सहमति जताई थी।मगर अब इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों के मौलवियों द्वारा संचालित मदरसों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था इत्तेहाद तंजीमात-ए-मदारिस पाकिस्तान ने मंगलवार को एक बैठक के बाद सरकारी प्रभाव से मदरसों को मुक्त रखने की यह घोषणा की। मौलवियों के एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने इस्लामाबाद में जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम फजल (जेयूआई-एफ) के प्रमुख मौलाना फजलुर रहमान से उनके आवास पर मुलाकात की और मदरसों के पंजीकरण से संबंधित विधेयक को लेकर पैदा हुए विवाद में उनके रुख का समर्थन किया। जेयूआई-एफ नेता सरकार पर सोसाइटी पंजीकरण (संशोधन) विधेयक 2024 के लिए राजपत्र अधिसूचना जारी करने का दबाव बना रहे हैं। इसका उद्देश्य 2019 के समझौते को वापस लेना है और इसी के साथ जिला प्रशासन को मदरसों का पंजीकरण करने का अधिकार मिलेगा।

दिल्ली वासियों के लिए संजीवनी योजना का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियां शुरू

हो गई हैं। सभी राजनीतिक दल चुनाव को ध्यान में रखते हुए अपनी ओर से अलग-अलग घोषणाएं कर रहे हैं। इसी क्रम में दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार ने भी बड़ा ऐलान किया है। आम आदमी पार्टी के प्रमुख और दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की और दिल्ली वासियों के लिए %संजीवनी योजना% का ऐलान किया है। केजरीवाल की ये संजीवनी योजना है क्या? इस योजना के लिए कौन-कौन से लोग एलिजिबल होंगे? लोग इस योजना का फायदा कैसे ले पाएंगे? आइए जानते हैं इन सभी सवालों के जवाब।

अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को ऐलान किया है कि आगामी चुनाव में दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने पर 'संजीवनी योजना' शुरू की जाएगी। चुनाव के बाद इस योजना को शुरू किया जाएगा। केजरीवाल ने कहा है कि संजीवनी योजना के तहत दिल्ली में 60 और उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्गों का सभी सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में अनलिमिटेड मुफ्त इलाज किया जाएगा।

अंबेडकर मुद्दे पर बवाल: अमित शाह ने प्रेस कांफ्रेंस कर

कांग्रेस को सुनाई खरी-खरी, खरगे को भी दी नसीहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के भाषण के बाद से विपक्ष लगातार बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के मुद्दे पर अमित शाह से माफी की मांग कर रहा है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने केंद्रीय गृहमंत्री से बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के संदर्भ में की गई टिप्पणी को लेकर कहा कि देश संविधान निर्माता का अपमान सहन नहीं करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि गृहमंत्री को माफी मांगनी चाहिए। राहुल गांधी ने संसद परिसर में विपक्ष के विरोध प्रदर्शन की तस्वीर को भी साझा किया। इस मामले में अब सभी विपक्षी पार्टियां कूद पड़ी हैं और अमित शाह से माफी की मांग कर रही है। इस बीच केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह प्रेस को संबोधित कर कांग्रेस पर खूब निशाना साधा और कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को नसीहत भी दे डाली।

अपने संबोधन में अमित शाह ने कहा कि संसद में पक्ष और विपक्ष का नजरिया अलग-अलग होता है। संसद जैसे देश के सर्वोच्च लोकतांत्रिक फोरम में जब चर्चा होती है तब इसमें एक बात कॉमन होती है कि बात तथ्य और सत्य के आधार पर होनी चाहिए। कल से कांग्रेस पार्टी ने जिस तरह से तथ्यों को तोड़ मरोड़कर रखने का प्रयास किया वह अत्यंत निंदनीय है और मैं इसकी निंदा करना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि यह क्यों हुआ क्योंकि भारतीय जनता पार्टी के वक्ताओं ने संविधान पर, संविधान के रचनाओं को मूल्यों पर और जब जब भारतीय जनता पार्टी का शासन रहा, इसपर फैक्ट के साथ भाजपा के वक्ताओं ने जनता के सामने उदाहरणों के साथ विषय रखा।

उन्होंने आगे कहा कि इसके आधार पर तय हुआ कि संविधान विरोधी पार्टी, बाबा साहेब आंबेडकर की विरोधी पार्टी है कांग्रेस, कांग्रेस ने वीर सावरकर का अपमान किया, न्यायपालिका का अपमान किया, सेना के शहीदों का अपमान किया और भारत की भूमि को तोड़कर विदेशी देशों को देने की हिमाकत कांग्रेस पार्टी ने की। जब यह पूरा सत्य उजागर हुआ तो कांग्रेस पार्टी ने फिर से अपनी बातों को तोड़ मरोड़कर समाज में फैलाने का प्रयास किया। संसद में जब चर्चा हो रही थी तो यह सिद्ध हो गया कि बाबा साहेब अंबेडकर का कांग्रेस ने पुरजोर विरोध किया। बाबा साहेब के न रहते हुए भी कांग्रेस ने बाबा साहेब को हासिये पर ढकेलने का प्रयास किया। संविधान सभा अपना काम कर चुकी थी। इसके बाद जब चुनाव हुआ तो दोनों बार कांग्रेस ने बाबा साहेब को हराने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

लखनऊ कांग्रेस के दफ्तर में बेहोश मिला युवक

लखनऊ (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी के विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए गोरखपुर से लखनऊ पहुंचे एक शख्स की मौत हो गई। गोरखपुर के रहने वाले प्रभात पांडेय कांग्रेस दफ्तर में बेहोश मिले, जिसके बाद उन्हें सिविल अस्पताल लाया गया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। प्रभात पांडेय की मौत की खबर सुनते ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक अस्पताल पहुंचे। ब्रजेश पाठक ने इस दौरान कहा कि पोस्टमॉर्टम के बाद प्रभात की मौत की असल वजह पता चल जाएगा। वहीं कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बयान देते हुए मांग की कि सरकार इस पूरे मामले की जांच कराए। अजय राय ने आगे कहा कि पुलिस ने कांग्रेसियों के रास्ते में नुकीली कील वाले बैरिकेड लगाए थे और वो खुद पुलिस की धक्का-मुक्की में बेहोश हो गए थे। उधर पुलिस का कहना है कि प्रभात के शरीर में कोई चोट के निशान नहीं मिले हैं और पूरे मामले की जांच की जा रही है। पुलिस अधीक्षक रवीना त्यागी ने इस मामले पर कहा कि 18 दिसंबर 2024 की शाम 5 बजे प्रभात पांडे को कांग्रेस कार्यालय से बेहोशी की हालत में सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

महाकुंभ मेले के लिए ट्रेन में मिलेगी मुफ्त यात्रा?

रेलवे मंत्रालय ने एसी किसी रिपोर्ट्स को बेबुनियाद और भ्रामक करार देते हुए खारिज कर दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (महाकुंभ मेला जिला) में महाकुंभ 2025 की तैयारियां ज़ोर-शोर से जारी हैं। इस बीच रेलवे मंत्रालय ने उन रिपोर्ट्स को बेबुनियाद और भ्रामक करार देते हुए खारिज कर दिया है जिसमें कहा जा रहा है कि आगामी महाकुंभ मेले के समय यात्रियों को ट्रेनों में मुफ्त यात्रा की अनुमति दी जाएगी। रेल मंत्रालय ने साफ कर दिया है कि उनकी ओर से ऐसा कोई भी प्रावधान नहीं किया गया है।

रेलवे ने बयान जारी करते हुए कहा- ÷भारतीय रेलवे के संज्ञान में आया है कि कुछ मीडिया संस्थान ऐसी खबरें प्रसारित कर रहे हैं कि महाकुंभ मेले के दौरान यात्रियों को मुफ्त यात्रा करने की अनुमति दी जाएगी।÷ भारतीय रेलवे इन खबरों का स्पष्ट रूप से खंडन करता है, क्योंकि ये पूरी

तरह से बेबुनियाद और भ्रामक हैं।÷

बिना टिकट यात्रा दंडनीय अपराध: रेलवे की ओर से जारी किए गए बयान में ये भी कहा गया है कि नियमों के तहत ट्रेन में बिना टिकट के यात्रा करना पूरी तरह से वर्जित और दंडनीय अपराध है। महाकुंभ मेले या किसी अन्य मौके के दौरान मुफ्त यात्रा की कोई सुविधा नहीं दी गई है। रेलवे ने कहा है कि वह महाकुंभ के दौरान यात्रियों के लिए निर्बाध यात्रा सुविधा को सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। रेलवे की ओर से महाकुंभ के दौरान बड़ी संख्या में यात्रियों की यात्रा की संभावना को देखते हुए विशेष यात्री क्षेत्र, अतिरिक्त टिकट काउंटर और अन्य आवश्यक सुविधाओं की स्थापना की व्यवस्था की जा रही है।

उत्तर प्रदेश में प्रयागराज महाकुंभ मकर संक्रांति 2025 को शुरू होगा और 26 फरवरी, 2025 तक चलेगा। इस आयोजन के लिए महाकुंभ मेला क्षेत्र में नए जिले का निर्माण भी किया गया है। सीएम योगी कीनेतृत्व वाली यूपी सरकार को उम्मीद है कि दुनिया भर से करीब 40 करोड़ श्रद्धालु महाकुंभ में भाग लेंगे।

मिर्जापुर में कपड़ा प्रेस करते हुए 2 लोगों की दर्दनाक मौत

मिर्जापुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश से कपड़ा प्रेस करते हुए 2 लोगों की मौत की बेहद दर्दनाक खबर सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों मृतकों की जान जाने के बारे में तब पता चला जब उनकी दुकान के बगल में चाय की टपरी लगाने वाले ने पुलिस को जानकारी दी। पुलिस ने घटना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सूबे के मिर्जापुर जिले के दुर्जनपुर नदौली बाजार में किराये की दुकान में शॉर्ट सर्किट के कारण करंट लगने से 2 लोगों की मौत हो गई। दोनों मृतकों की पहचान कर ली गई है और उनके शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर मामले की जांच की जा रही है।

अपर पुलिस अधीक्षक ओपी सिंह ने बुधवार को जानकारी दी कि दिल दहला देने वाली यह दुर्घटना मंगलवार देर रात डुमंडगंज कोतवाली थाना क्षेत्र में हुई। उन्होंने कहा, 'दोनों व्यक्तियों ने दुर्जनपुर नदौली बाजार में एक दुकान किराये पर ले रखी थी। इस दुकान पर दोनों दर्जी का काम करते थे। बुधवार की सुबह जब दोनों ने दुकान नहीं खोली तो बगल में चाय की टपरी लगाने वाले व्यक्ति को शक हुआ जिसके बाद उसने शोर मचाया। स्थानीय लोगों ने इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने वैकल्पिक प्रवेश द्वार से दुकान में प्रवेश किया, तो पाया कि दोनों व्यक्ति इस्त्री के पास मृत पड़े थे।'

43 साल बाद किसी भारतीय पीएम का कुवैत दौरा

दोनों देशों के बीच ऐसा रहा है संबंध

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और कुवैत के बीच परंपरागत रूप से मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं, जो साझा इतिहास, मजबूत व्यापारिक संबंधों और सांस्कृतिक साझेदारी पर आधारित हैं। इस साल भारतीय प्रधानमंत्री की कुवैत की पहली राजकीय यात्रा 43 वर्षों बाद एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हो रही है, जो दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग को दर्शाता है। विदेश मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि प्रधानमंत्री मोदी 21-22 दिसंबर को कुवैत का दौरा करेंगे।

भारत और कुवैत के रिश्ते प्राचीन काल से ही मजबूत रहे हैं, जब कुवैत का आर्थिक तंत्र समुद्री

व्यापार पर निर्भर था। भारत से कुवैत आने-जाने वाले व्यापारिक जहाजों के माध्यम से लकड़ी, अनाज, कपड़े और मसाले कुवैत भेजे जाते थे, जबकि कुवैत से खजूर, अरब घोड़े और मोती भारत भेजे जाते थे। भारतीय रुपया कुवैत में 1961 तक कानूनी मुद्रा था, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों की स्थिरता का प्रतीक है।

भारत और कुवैत के बीच औपचारिक कूटनीतिक संबंध 1961 में स्थापित हुए थे। इसके बाद से दोनों देशों के बीच कई उच्चस्तरीय दौरे हुए, जिनमें भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन (1965), प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी (1981) और उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी (2009) शामिल हैं। कुवैत से भी कई महत्वपूर्ण दौरे हुए, जिनमें शेख सबा अल-आहमद अल-जाबेर अल-सबा (2006) और प्रधानमंत्री शेख जाबेर अल-मुबारक अल-हमद अल-सबा (2013) शामिल हैं। 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कुवैत के क्राउन प्रिंस के बीच न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान मुलाकात हुई। इसके अलावा भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने 18 अगस्त 2024 को कुवैत का दौरा किया।

संक्षिप्त समाचार

बैंक ऑफ़ इंडिया ने मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी से किया विशेष अनुबंध

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बैंक ऑफ़ इंडिया ने मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी से विशेष अनुबंध किया है। इसमें कंपनी के नियमित एवं संविदा कर्मचारियों के लिए 2 करोड़ रूपये तक का दुर्घटना बीमा सहित कई विशेष आकर्षक बैंकिंग सुविधा मुहैया कराई जाएंगी। इसमें बिजली कंपनी के नियमित एवं संविदा कर्मचारियों के लिए वेतन बचत खाता खोलने पर अनेक सुविधाएं दी जायेगी। इसमें आकर्षक बैंकिंग सुविधाएं जैसे जीरो बैलेंस रहने पर भी कोई पेनल्टी नहीं लगेगी, डेबिट कार्ड एवं क्रेडिट कार्ड निशुल्क जारी किया जाएगा, बैंक द्वारा चेक बुक, पे आर्डर, डीडी निशुल?क रहेगा। वहीं एनईएफटी अथवा आरटीजीएस सुविधा भी नि:शुल्क रहेगी। बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पर्सनल लोन, कार लोन एवं होम लोन में विशेष छूट दी जाएगी। लोन पर ब्याज दर में 0.25 प्रतिशत तक एवं प्रोसेसिंग शुल्क में 100त्न तक की छूट देने की बात कही गयी है। इसके साथ ही खाता धारक को रुपे सेलेक्ट क्रेडिट कार्ड निशुल्क जारी किया जाएगा, जिसमें कुछ मार्केट बेसिस सुविधाएं दी जाएंगी। साथ ही एक करोड़ तक का पूर्ण दिव्यांग बीमा, 50 लाख तक का दुर्घटना आंशिक दिव्यांगता बीमा रहेगा। कर्मचारी की किसी भी कारण से मृत्यु होने पर 7 लाख रूपये का सामान्य मृत्यु बीमा/ टर्म इन्श्योरेंस भी नि:शुल्क देय होगा। इसके अलावा अन्य सुविधाएं भी बैंक द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। अधिक जानकारी के लिए कंपनी के कर्मचारी बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में संपर्क कर सकते हैं।

सीहोर में आयोजित होगी जन-सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा सीहोर क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं की विद्युत संबंधी शिकायतों के शीघ्र निराकरण के लिए वृत्त कार्यालय सीहोर में विद्युत उपभोक्ता शिकायत निवारण फोरम की जन-सुनवाई की जायेगी। विद्युत उपभोक्ता शिकायत निवारण फोरम द्वारा इस जनसुनवाई में सीहोर वृत्त अंतर्गत आने वाले विद्युत उपभोक्ताओं की विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 126, 135 तथा 138 को छोड़कर शेष शिकायतें जैसे विद्युत बिल से संबंधित, मीटर से संबंधित, नवीन कनेक्शन में विलंब, विद्युत आपूर्ति में व्यवधान, वोल्टेज से संबंधित, लोड शेडिंग/अधिसूचित विद्युत कटौती, सुरक्षा निधि पर ब्याज अदायगी इत्यादि शिकायतों की सुनवाई की जाएगी तथा शिकायतों का त्वरित निराकरण भी किया जाएगा। कंपनी ने बिजली उपभोक्ताओं से अपील की है कि जन-सुनवाई के माध्यम से बिजली उपभोक्ता अपनी विद्युत संबंधी शिकायतों का निराकरण कराने के लिए वृत्त कार्यालय सीहोर में प्रात: 11 बजे के पूर्व अपना रजिस्ट्रेशन कराना सुनिश्चित करें। जन-सुनवाईदशहरा वाला बाग, मंत्री पेट्रोल पम्प के पास, इंदौर नाका स्थित वृत्त कार्यालय सीहोर में 18 दिसंबर 2024 को प्रात: 11 बजे से दोपहर 1?30 तक आयोजित होगी।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत 20 दिसंबर को होगी स्कूली बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के तत्वावधान 14 दिसम्बर से 21 दिसम्बर 2024 तक पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह मनाया जा रहा है। इसमें बिजली बचाने को लेकर विभिन्न जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा राजधानी भोपाल में चिनार पार्क में 20 दिसंबर को प्रात: 10 बजे से दोपहर 12?30 बजे तक स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए ''पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना'' थीम पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता से स्कूली छात्र-छात्राएं ऊर्जा बचत और संरक्षण के महत्व को समझेंगे। साथ ही चित्रों के माध्यम से अपनी अभिरूचि व्यक्त कर सकेंगे।

मात्र 5 रुपये में ग्रामीण कृषि पंप उपभोक्ताओं को मिलेंगे नवीन विद्युत कनेक्शन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी अपने कार्य क्षेत्र में ग्रामीण कृषि उपभोक्ताओं को अब मात्र 5 रुपये में स्थायी कृषि पंप कनेक्शन उपलब्ध कराने जा रही है। कंपनी ने कहा है कि कृषि पम्पों के कनेक्शनों की संख्या बढ़ाए जाने के लिए ऐसे कृषक जो विद्युत की उपलब्ध लाइन के समीप स्थित हैं, उनको सुविधानुसार आसानी से स्थाई कृषि पंप कनेक्शन दिया जाना सुनिश्चित किया गया है। म.प्र.विद्युत नियामक आयोग द्वारा जारी नियमों के अनुसार अब निम्न दाब (एलटी) पोल से उपभोक्ताओं द्वारा स्थापित होने वाली सर्विस लाइन में सुरक्षा नियमों की जॉच कर 5 रूपए मात्र में ग्रामीण क्षेत्र में नवीन स्थाई कृषि कनेक्शन प्रदान किया जाएगा। सरल संयोजन पोर्टल में उपभोक्ता का नवीन कनेक्शन का फार्म भरने की कार्यवाही भी कंपनी के मैदानी अमले द्वारा नियमानुसार की जाएगी।

मध्यप्रदेश वन संपदा की दृष्टि से समृद्ध राज्य-राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि मध्यप्रदेश वन संपदा की दृष्टि से समृद्ध राज्य है। यहां पर औषधीय जड़ी-बूटियों का समृद्ध भंडार है। कोविड महामारी ने विश्व को आयुर्वेद के महत्व से पुन: परिचित कराया है। उन्होंने महामारी के दौरान मरीजों के ईलाज के लिए आयुर्वेदिक काढ़ा वितरण कार्य के लिए प्रदेश सरकार की सराहना की। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि वन मेले का आयोजन, वन संसाधनों की महत्ता, उनके संरक्षण और संवर्धन की जागरूकता प्रसार की दिशा में सुखद संकेत है। राज्यपाल श्री पटेल 10वें अंतर्राष्ट्रीय वन मेले के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने शुभारंभ अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ हितग्राहियों को लघु वनोपज संघ अंतर्गत प्रोत्साहन पारिश्रमिक राशि का वितरण किया। वन एवं राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ द्वारा 10वां अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का लाल परेड ग्राउंड भोपाल में 17 से 23 दिसंबर तक आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का अपना महत्व है, लेकिन वनों से प्राप्त औषधियों की विशेष उपयोगिता है। कोरोना के कठिन समय में आयुर्वेद ने लोगों के जीवन बचाने में मदद की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा दिया है। अब

चिकित्सा जगत में फिर से आयुष का महत्व बढ़ा है। वन मेले जैसे आयोजन इस नाते बहुत महत्व रखते हैं। वास्तव में यह अंतर्राष्ट्रीय वन मेला अनोखा है। इस मेले की शुरूआत 2001 से हुई और धीरे-धीरे यह प्रदेश से आगे बढ़कर देश तक और फिर वैश्विक हो गया। मेले ने अपनी अलग पहचान बनाई है। आम तौर पर वन और वन-सम्पदा से मेलों का इतना विस्तार होना हम सब के लिए गौरव की बात है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में 10वें अंतर्राष्ट्रीय वन मेले को संबोधित कर रहे थे।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे प्रदेश की वन सम्पदा विशिष्ट है। हम तो सौभाग्यशाली हैं कि हमारे यहां वन सम्पदा, वनों का आंतरिक वातावरण भी विशेष है और प्रदेश के वनों की अलग पहचान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन्य प्राणी हमारे जंगल के आभूषण होते हैं, जिनके कारण जंगल की शोभा होती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश चीतों को पुनर्स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई है। वन्य जीव परम्परा में सभी प्रकार के टाइगर, तेंदुआ, चीता का महत्व है। टाइगर में हम देश में नम्बर वन पर है। वास्तव में पुनर्स्थापना में मध्यप्रदेश की भूमि का चयन होना हमारे लिये गर्व की बात है।

जो चीते सम्पर्ण एशिया से ही गायब हो गए थे। इसके लिए वन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं। वन विभाग ने यह अनोखा प्रयोग किया है। इस प्रयोग के अच्छे परिणाम उनके लिये आ रहे हैं। धीरे-धीरे हमारे यहाँ नए-नए मेहमान आ रहे हैं। ऐसा लग रहा है वे कि मध्यप्रदेश का वातावरण अनुकूल हो गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के वनवासी भी वनों की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश और राजस्थान के बीच सिंचाई, उद्योग क्षेत्र और पेयजल की दृष्टि से महत्वपूर्ण पार्वती-काली सिंध-चम्बल परियोजना के लिए आज जयपुर में त्रिपक्षीय अनुबंध का अवसर दिया।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा की अध्यक्षता में हुई वाणिज्यिक कर विभाग की परामर्शदात्री समिति की बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवडा की अध्यक्षता में मंगलवार को विधानसभा में वाणिज्यिक कर विभाग की परामर्शदात्री समिति की बैठक संपन्न हुई। समिति के सदस्य विधायक श्री प्रदीप लारिया, श्री जयंत मलैया, श्री अभय कुमार मिश्रा, श्री दिनेश राय मुनमुन, श्री मुकेश टंडन और विपिन जैन उपस्थित थे।

बैठक में राजस्व संग्रहण बढ़ाने, वैट अंतर्गत कर निर्धारण जैसे मुद्दों के निराकरण, करदाताओं को उपलब्ध ऑनलाइन सुविधाओं, करदाताओं की सुविधा के लिए किए गए नवाचार, जीएसटी के अंतर्गत नए करदाताओं की सुविधा के लिए बनाए गए वेलकम किट जैसे विषयों पर चर्चा हुई। समिति के सदस्यों ने सुविधाओं को और प्रभावकारी बनाने के लिए अपने-अपने सुझाव दिए। इसके अलावा बैठक में दस्तावेज पंजीयन की प्रक्रिया के कंप्यूटरीकरण, विभागीय संपदा पोर्टल को और ज्यादा प्रभावी बनाने अन्य विभागों से इसका समावेश करने और संपदा पोर्टल का उन्नयन करने, सेवा की गुणवत्ता में सुधार लाने और मध्य प्रदेश स्टॉम्प नियम और रजिस्ट्रेशन अधिनियम में संशोधन करने जैसे मुद्दों पर भी चर्चा हुई। इसके अलावा आबकारी, राजस्व और ई-आबकारी सॉफ्टवेयर बनाने के संबंध में भी विस्तार से चर्चा हुई। समिति के सदस्यों ने अपने-अपने सुझाव दिए। इन सुझावों को आगामी रणनीतियों में शामिल किया जाएगा।

परिवहन से राजस्व आय 3 हजार 54 करोड़ रूपये हुई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। परिवहन विभाग को इस वर्ष अप्रैल से नवम्बर 2024 तक 3 हजार 54 करोड़ रूपये की राजस्व आय प्राप्त हुई है। इस वर्ष प्रदेश में राज्य सरकार ने परिवहन से राजस्व आय का लक्ष्य 5 हजार 500 करोड़ रूपये का निर्धारित किया है।

विद्युत पेंशनर्स हित रक्षक संघ का वार्षिक सम्मेलन संपन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि पेंशनर्स हमारे समाज की धरोहर हैं, और उनकी समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिकता है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सिंधु भवन भोपाल में विद्युत पेंशनर्स हित रक्षक संघ के प्रादेशिक वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन किया।उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने संघ की स्मारिका का विमोचन भी किया। संगठन प्रतिनिधियों ने उप मुख्यमंत्री को पेंशनर्स की तीन प्रमुख मांगों ङ्क पेंशन की शासकीय गारंटी, महंगाई राहत का समय पर भुगतान और कैशलैस हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी से अवगत कराते हुए ज्ञापन सौंपा। उन्होंने इन मांगों पर गंभीरता से विचार करने का आश्वासन दिया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उपस्थित पेंशनर्स से आत्मीय संवाद किया।प्रांतीय कार्यवाहक अध्यक्ष श्री आर.डी. मिश्रा, संरक्षक डॉ. शैलेन्द्र व्यास, और भोपाल शाखा अध्यक्ष बी.आर. मानकर सहित अन्य पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड के सहयोग से वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में छात्र-छात्राओं में वन, वन्यप्राणियों एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से भोपाल शहर एवं उसके आस-पास के ग्रामों के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये एक दिवसीय पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प आयोजित किये जा रहे हैं। इसी क्रम में आज 17 दिसम्बर को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सी.एम. राईज कमला नेहरू टी.टी. नगर भोपाल की 33 छात्राओं एवं 2 शिक्षिकाओं ने उक्त पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प में भाग लिया। कार्यक्रम में स्त्रोत व्यक्ति रूप में श्री ए.के. खरे, से.नि. उप वनसंरक्षक एवं श्री विजय नंदवंशी उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को पक्षी दर्शन, तितली, वन्यप्राणी दर्शन स्थल पर विद्यमान वानिकी गतिविधियों की जानकारी, वन, वन्यप्राणी व पर्यावरण से संबंधित रोचक

गतिविधियों कराई गई एवं सर्पों के बारे में जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया। इसके अतिरिक्त बाघ, तेंदुआ, भालू, मगर, घड़ियाल, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि वन्यप्राणियों का भी अवलोकन किया। साथ ही किंग फिशर, ओपन बिल स्टॉर्क, वुलीनेक स्टॉर्क, कार्मोरिंट, जकाना, कूट, आदि पक्षी दिखे एवं नीडम क्षेत्र में कृत्रिम घोंसले तथा पक्षियों के पुतले भी देखे। इस अवसर पर मिशन लाईफ अंतर्गत पर्यावरण को बचाने के लिये उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा शपथ भी ली गई एवं विशेषज्ञों द्वारा मिशन लाईफ के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प के दौरान संचालक वन विहार श्री मीना अवधेशकुमार शिवकुमार एवं सहायक संचालक वन विहार श्री एस. के. सिन्हा सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश-राजस्थान के किसानों की तकदीर बदलेगी पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश और राजस्थान को समृद्ध और किसानों को खुशहाल बनाने वाली पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना के लिये त्रि-स्तरीय अनुबंध प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में आज जयपुर में हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो अभियान के स्वप्न को साकार करने प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश और राजस्थान के बीच समझौता कराते हुए पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना को मूर्त रूप दिया। यह परियोजना मध्यप्रदेश के देवास, गुना, शिवपुरी, सीहोर, राजगढ़, उज्जैन, आगर-मालवा, इंदौर, शाजापुर, मंदसौर एवं मुरैना के किसानों को सिंचाई के लिये भरपूर पानी और पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी। इससे किसानों के जीवन में खुशहाली आने के साथ उनकी फसलें भी लह-लहा उठेंगी।

देवास जिले में जिला स?तरीय किसान सम्मेलन टोंकखुर्द के मंडी प्रांगण में नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय की उपस्थिति में हुआ। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने इस मौके पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इतनी बड़ी योजना की सौगात दी है कि सोनकच्छ क्षेत्र का एक खेत भी ऐसा नहीं रहेगा जहां पर पानी नहीं पहुंचेगा। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना के अंतर्गत रणजीत सागर कॉम्पलेक्स सिंचाई परियोजना से किसानों के खेत में पानी पहुँचेगा तो किसान चार-चार फसल ले पाएंगे। उन्होंने कहा कि किसान भाई रसायनिक खाद से बचे और जैविक खेती की और रुख करें।

पीकेसी लिंक प्रोजेक्ट पर मध्यप्रदेश, राजस्थान और केंद्र सरकार के बीच अनुबंध सहमति पत्र (मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट) हस्ताक्षरित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में मंगलवार जयपुर में पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) लिंक परियोजना पर मध्यप्रदेश, राजस्थान और केंद्र सरकार के बीच अनुबंध सहमति पत्र (मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट) हस्ताक्षरित होने पर प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने प्रधानमंत्री श्री मोदी, केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त किया है।

मंत्री श्री सिलावट ने कहा है कि यह परियोजना दोनों राज्यों में विकास के नए द्वार खोलेगी। इस परियोजना से न सिर्फ सिंचाई और पेयजल के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध होगा अपितु उद्योगों और पर्यटन का विकास होने से रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में इस परियोजना का कार्य प्रदेश में नियत समय अवधि में गुणवत्ता के साथ पूर्ण किया जाएगा। जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने कहा परियोजना की सौगात मिलना प्रदेश के लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय है। इस परियोजना से मालवा और चंबल क्षेत्र की तस्वीर एवं तकदीर बदलेगी। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में तरक्की होगी। इस परियोजना से प्रदेश के मालवा और चंबल क्षेत्र में 6 लाख 13 हजार 520 हेक्टेयर में सिंचाई होगी और 40 लाख की आबादी को पेयजल उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त लगभग 60 वर्ष पुरानी चंबल दाईं मुख्य नहर एवं वितरण तंत्र प्रणाली के आधुनिकीकरण कार्य से भिंड, मुरैना एवं श्योपुर जिलों के 1205 ग्रामों में 03 लाख 62 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में कृषकों की मांग अनुसार पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

परियोजना से प्रदेश के 13 जिलों गुना, मुरैना, शिवपुरी, भिंड, श्योपुर, उज्जैन, सीहोर, मंदसौर, इंदौर, धार, आगर मालवा, शाजापुर और राजगढ़ जिलों के 3217 ग्रामों को लाभ मिलेगा।

पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना मध्य प्रदेश एवं राजस्थान दोनों राज्यों के किसानों और नागरिकों के लिए वरदान साबित होगी। इससे किसानों को भरपूर सिंचाई के लिए पानी मिलेगा और विकास के नये द्वार खुलेंगे। परियोजना से दोनों राज्यों में समृद्धि आयेगी। परियोजना से मिलने वाले जल से किसान अपनी उपज को दोगुना कर सकेंगे, जिससे उनके परिवार के साथ प्रदेश भी समृद्ध होगा।

पीकेसी लिंक परियोजना की अनुमानित लागत 72 हजार करोड़ है, जिसमें मध्यप्रदेश 35 हजार करोड़ और राजस्थान 37 हजार करोड़ रूपये व्यय करेगा। केन्द्र की इस योजना में कुल लागत का 90 प्रतिशत केन्द्रांश और 10 प्रतिशत राज्यांश रहेगा। परियोजना की कुल जल भराव क्षमता 1908.83 घन मीटर होगी। साथ ही 172 मिलियन घन मीटर जल, पेयजल और उद्योगों के लिये आरक्षित रहेगा। परियोजना अंतर्गत 21 बांध/बैराज निर्मित किये जाएंगे।

चंदेरी इको रिट्रीट' की शुरुआत 18 दिसंबर से -राज्य मंत्री लोधी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रसिध्द ऐतिहासिक नगर चंदेरी में एडवेंचर के रोमांच और लोक कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ लग्ज़री ग्लैपिंग के अनुभव के लिए %चंदेरी इको रिट्रीट' की शुरुआत 18 दिसंबर से की जा रही है। पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने बताया कि %चंदेरी इको रिट्रीट' ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगरी चंदेरी को पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से लाने का एक प्रयास है।

चंदेरी इको रिट्रीट, पर्यटकों और आगंतुकों को चंदेरी की समृद्ध विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक स्थलों से अवगत कराएगा। इससे न केवल स्थानीय शिल्पकारों और व्यवसायों को रोजगार और लाभ मिलेगा, बल्कि चंदेरी देश-विदेश के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनेगा। प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति एवं प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि %चंदेरी इको रिट्रीट' के दूसरे संस्करण के दौरान चंदेरी की लोकप्रिय फिल्म लोकेशंस से पर्यटकों को जोड़ने के लिये स्त्री सेल्फी पॉइन्ट बनाने की पहल की गई

है। ब्लॉकबस्टर फिल्म स्त्री के दोनों पार्ट की शूटिंग वाले लोकेशंस में जाकर पर्यटक सेल्फी लें सकेंगे। इसके साथ ही स्थानीय कला पर आधारित आर्ट और क्रॉफ्ट बाजार, स्थानीय व्यंजनों के स्वाद के लिए फूड फेस्टिवल, लोक कला व सांस्कृतिक आयोजन के साथ ही रोमांचक और साहसिक गतिविधियां पर्यटकों को अविस्मरणीय अनुभव के लिए तैयार है। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा जिला प्रशासन अशोकनगर एवं %सन सेट डेजर्ट कैंप% के सहयोग से ऑल सीज़न टेंट सिटी स्थापित की गई है। यहां पर्यटक लग्जरी ग्लैम्पिंग का अनुभव कर सकेंगे। चंदेरी के इतिहास को करीब से जानने के लिए हेरिटेज वॉक का भी आयोजन किया जाएगा, जो शहर के प्राचीन किलों, महलों और मस्जिदों की अद्भुत कहानियों को जीवंत बनाएगा। इसके साथ ही चंदेरी इको रिट्रीट दौरान एक इन-हाउस हॉस्पिटेलिटी टीम भी मौजूद रहेगी, जो मेहमानों को चंदेरी भ्रमण में मदद और मार्गदर्शन प्रदान करेगी।चंदेरी इको रिट्रीट के दौरान पर्यटकों को देश के पहले क्रॉफ्ट हैंडलूम टूरिज्म विलेज प्राणपुर का भ्रमण करने का मौका मिलेगा।

मुख्य सचिव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से दिए प्रशासन गांव की ओर अभियान के निर्देश

विभागीय उपलब्धियों तथा प्रकरणों के निराकरण की जानकारी पोर्टल में दर्ज करें : मुख्य सचिव

जनकल्याण के कार्यों की तथ्यपरक रिपोर्ट पोर्टल में दर्ज करें : मुख्य सचिव

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रदेश के मुख्य सचिव अनुराग जैन ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से संभाग के कमिश्नर, कलेक्टर तथा अन्य अधिकारियों को प्रशासन गांव की ओर अभियान के संबंध में निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कहा कि अभियान 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान सीएम हेल्पलाइन प्रकरण, राजस्व महाभियान में प्रकरणों के निराकरण, जन सुनवाई तथा जन शिकायत के प्रकरणों का निराकरण करके भारत सरकार के पोर्टल पर दर्ज कराएं। इस अवधि में विभागीय उपलब्धियों, हितग्राही मूलक योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानियाँ तथा जनकल्याण के कार्यों को भी पोर्टल में दर्ज कराएं। पोर्टल में सभी जिलों से प्रकरणों के निराकरण के संबंध में तथ्यपरक रिपोर्ट दर्ज करें।

मुख्य सचिव ने कहा कि भारत सरकार के निर्देशों के अनुरूप चलाए जा रहे प्रशासन गांव की ओर अभियान के 8 प्रमुख बिन्दु हैं। इनमें सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों, सीएम हेल्पलाइन तथा जनसुनवाई के प्रकरणों के निराकरण, हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ देने से संबंधित शिकायतों के निराकरण को शामिल किया गया है। साथ ही सुशासन से जुड़े लोक सेवा गारंटी अभियान, समाधान एक दिन, सीएम हेल्पलाइन पोर्टल तथा अन्य ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने और निराकरण के प्रयासों को भी इसमें शामिल किया गया है। पोर्टल पर विभिन्न योजनाओं और विभागीय सेवाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानियाँ, जिलों के विजन डाक्यूमेंट, प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो में कलेक्टर के सोशल मीडिया एकाउंट से दर्ज विभागीय उपलब्धियों को शामिल किया गया है। अभियान के दौरान सीपी ग्राम की सभी शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित करें।

मुख्य सचिव ने कहा कि मध्यप्रदेश सुशासन के क्षेत्र में कार्य करने वाला अग्रणी राज्य है। प्रतिदिन औसतन 40 हजार से अधिक प्रकरणों का निराकरण किया जाता है। प्रकरणों की जानकारी पोर्टल पर दर्ज करना सुनिश्चित करें। जिन जिलों में विजन डॉक्यूमेंट तैयार हो गया है वे भी इसे उपलब्ध करा दें। अभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। इसमें भी प्रतिदिन लगाए जा रहे शिविरों में लाभान्वित हितग्राहियों की जानकारी पोर्टल पर दर्ज कराएं। सुशासन के सभी बिन्दुओं पर कार्यवाही करके ऑनलाइन रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने कहा कि मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के साथ प्रशासन गांव की ओर शिविर लगाए जाएंगे। इसके लिए जिलेवार कार्यक्रम निर्धारित कर लिया गया है। इन शिविरों में संभागीय और जिला स्तर के अधिकारी भी शामिल होंगे। सभी पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ देने का प्रयास किया जाएगा। अभियान के लिए सभी जिलों में नोडल अधिकारी तैनात कर दिए गए हैं। लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, कुसमी प्रिया पाठक, चुरहट शैलेश द्विवेदी तथा सभी जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला जेल में विशेष स्वास्थ्य परीक्षण सह विधिक सहायता एवं जागरूकता शिविर आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार चिकित्सा विभाग, जेल प्रशासन के सहयोग एवं प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी संजीव कुमार पाण्डेय के मार्गदर्शन में जिला जेल सीधी में बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण कराये जाने के उद्देश्य से 18 दिसम्बर को विशेष स्वास्थ्य परीक्षण सह विधिक सहायता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन एवं जिला जेल सीधी का निरीक्षण किया गया।

शविर का शुभारंभ वीरेन्द्र जोशी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट लक्ष्मण डोडवे, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी सोनू जैन, सिद्धार्थ शुक्ला जिला विधिक सहायता अधिकारी, जिला चिकित्सालय के चिकित्सकीय विशेषज्ञ हरिओम सिंह एवं अंकिता सिंह तथा जेल अधीक्षक रविशंकर सिंह, उप जेल अधीक्षक कृष्ण कुमार तिवारी, डिप्टी चीफलीगल एड डिफेंस काउंसिल विनोद कुमार श्रीवास्तव, पैनल लॉयर महेन्द्र कुमार मिश्रा, विजयचन्द्र गौतम, सतीश उर्मलिया, रूपेन्द्र कुमार मिश्रा सहायक ग्रेड-3 तथा जेल स्टाफकी उपस्थिति में किया गया। जागरूकता शिविर में बंदियों को विधिक सहायता, उनके अधिकार, अपीलीय अधिकार, जमानत के अधिकार, प्ली वार्गेनिंग तथा सालसा की योजना की जानकारी दी गई। बंदियों से अधिवक्ता, जेल में भोजन की गुणवत्ता चिकित्सकीय मेल-मिलाप तथा अन्य समस्याओं के संबंध में पूछताछ की गई। उक्त विशेष चिकित्सकीय परीक्षण शिविर में महिला एवं पुरूष बंदियों का एच.आई.वी., कैंसर, टी.बी. तथा अन्य बीमारी के संबंध में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा जॉच की जाकर बंदियों को दवा उपलब्ध कराई गई।

बेटी ने नाना से फोन पर कहा-पापा-मम्मी को मार रहे

पति ने पत्नी के सिर पर मारी कुल्हाड़ी, इलाज के दौरान तोड़ा दम

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। कोतवाली थाना क्षेत्र के पुरानी बस्ती इलाके के सत्यम वीडियो के पास एक पति ने पत्नी की हत्या कर दी। मंगलवार दोपहर से दोनों के बीच विवाद हो रहा था। महिला की बेटी ने मम्मी-पापा के बीच हो रहे विवाद की जानकारी अपने नाना को फोन पर दी थी। शाम को महिला के पति ने उसके सिर पर कुल्हाड़ी से कई वार कर दिए। पुलिस ने बताया कि पति महेंद्र बैगा और पत्नी सोमवती बैगा के बीच आए दिन विवाद होता था। महिला का मायका पड़ोस के गांव पचड़ी में हैं। मंगलवार दोपहर पति पत्नी की पिटाई कर रहा था। घर में उसकी छोटी बेटी थी। बेटी ने इसकी जानकारी अपने नाना और मामा को फोन पर दी थी। विवाद के बीच आरोपी ने महिला पर कुल्हाड़ी से हमला करते हुए कई वार किए। जब महिला के मायके के पक्ष के लोग घर पहुंचे तो देखा कि सोमवती खून से लथपथ घर के अंदर पड़ी थी। महिला के भाई ने पुलिस को मामले की जानकारी फोन पर दी। पुलिस मौके पर पहुंची और घायल पड़ी महिला को उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। कुछ देर के अंदर उपचार के दौरान महिला ने दम तोड़ दिया।

वाहन में बांधकर घसीटते हुए ले गए गायों के शव

गांववालों का आरोप- गोशाला में भूख से आए दिन हो रही गायों की मौत

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। बुधवार को सीधी जिले की एक गोशाला का वीडियो सामने आया है, जिसमें दो गाय के शवों को बोलेरो कार से घसीटते हुए ले जाया जा रहा है।

दरअसल, सरस्वती स्वसहायता समूह जिले के बहरी क्षेत्र के सिहोलिया गांव में कामधेनु नाम से गोशाला चलाता है। बुधवार दोपहर करीब 12 बजे यहां दो गायों की मौत हो गई। इसके बाद समूह के कर्मचारियों ने बोलेरो वाहन से उनके शवों को बांधा और घसीटते हुए करीब 400 मीटर दूर ले जाकर फेंक दिया। इस बीच गांव के किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बनाकर वायरल कर दिया।

खाने-पीने की व्यवस्था नहीं, आए दिन होती है मौत: गांव के राजभान साहू सहित अन्य लोगों का आरोप है कि कामधेनु गोशाला में गायों के लिए खाने-पीने की व्यवस्था नहीं है। इसकी वजह से आए दिन मवेशियों की मौत हो रही है। भूख-प्यास से अगर गायें मर जाती हैं तो उन्हें दफनाने के लिए कोई खास इंतजाम नहीं किए जाते।

50 मिलना चाहिए, मिलते हैं 20: वहीं प्रदेश गोसंवर्धन बोर्ड के मेंबर पुजारीलाल मिश्रा ने कहा कि यह सिहोलिया गांव का मामला है। गायों की ऐसी दुर्दशा नहीं होनी चाहिए, अगर किसी कारण वश गायों की मौत हो जाती है तो इस प्रकार घसीटना अमानवीय है। इस पर कार्रवाई होनी चाहिए। मिश्रा ने कहा कि प्रदेश सरकार गायों के संरक्षण के लिए प्रतिदिन प्रति गाय मात्र 20 का बजट देती है, जबकि इन्हें खाने-पीने सहित अन्य चीजों में कम से कम 50 का खर्च आता है। यह वजह भी ऐसी स्थिति के लिए जिम्मेवार है, लेकिन शवों को घसीटना किसी प्रकार से क्षम्य में नहीं है। इस पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

हमारे पास शिकायत नहीं आई: वहीं बहरी थाना प्रभारी राकेश बैस का कहना है कि हमारे पास कोई भी लिखित शिकायत नहीं आई है। वायरल वीडियो के संबंध में जानकारी प्राप्त हुई है, लेकिन जैसे ही कंप्लेंट आएगी। निश्चित तौर पर हम कड़ी कार्रवाई करेंगे।

समूह को कारण बताओ नोटिस दिया है: जिला पंचायत सीईओ अंशुमन राज ने बताया है कि गायों की घसीटने का मामला संज्ञान में आया है। हमने संबंधित स्व सहायता समूह के खिलाफ कारण बताओ नोटिस दिया है। 7 दिन में कारण का सही जवाब न मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

आधा एकड़ जमीन के लिए हुआ विवाद, सिर पर मारी टंगी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले की कमर्जी थाना अंतर्गत ग्राम लकोड़ा में जमीनी विवाद के कारण एक व्यक्ति के सिर पर धारदार हथियार से वार किया गया। जिसकी वजह से उसके सिर पर गंभीर रूप से चोट आई है। घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया है। घटना उसे वक्त की है जब राजकरण यादव आज बुधवार सुबह 8 बजे अपने घर के बाहर धूप ले रहे थे। जहां पीछे से उनके परिवार के लालू यादव आए और उनके साथ एक और व्यक्ति आया जिसने पीछे से उनके सिर पर लालू यादव ने टंगी मार दी। जिसकी वजह से काफी खून बहने लगा और रोने व चिल्लाने की आवाज सुनकर घर के अन्य सदस्य भी आ गए।

पत्नी के सामने पति की हत्या, नव विवाहिता ने जंगल में रुकवाई थी बाइक, छह महीने पहले ही हुई थी शादी

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले के गढ़वा थाना क्षेत्र के जंगल में नव विवाहिता के सामने पति की हत्या बदमाशों ने कर दी। घटना मंगलवार रात करीब 9 बजे की बताई जा रही है। दोनों की शादी छह महीने पहले ही हुई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

गढ़वा थाना प्रभारी अनिल पटेल ने बताया कि बीती रात करीब 9 बजे रामरक्षा गोंड पत्नी बिंदू को बाइक से मायके से लेकर अपने घर जा रहा था। रास्ते में बिंदू ने रामरक्षा से शौच आने की बात कही। रामरक्षा ने झाड़ियों के पास बाइक रोक दी। बिंदू बाइक से उतर झाड़ियों के पीछे शौच के लिए चली गई।

बिंदू ने पुलिस को बताया है कि जिस वक्त वो झाड़ियों के पीछे थी, उसी समय बाइक में कुछ लोग आए और पति के साथ मारपीट करने लगे। पति की आवाज सुन वो भी वहां पहुंच गई। बदमाशों ने उसे शाल से बांध दिया। इसके बाद धारदार हथियार से उसी के सामने पति रामरक्षा की हत्या कर दी। थाना प्रभारी अनिल पटेल का कहना है कि हम आरोपियों की तलाश कर रहे हैं। पुलिस को शक इस बात का भी है कि कहीं इस हत्या की साजिश में उसकी पत्नी तो नहीं शामिल है।

छह महीने पहले ही दोनों की शादी हुई थी। हत्या के पीछे की वजह प्रेम प्रसंग भी हो सकती है।

ट्रैक्टर ने किसान को मारी टक्कर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी के बकवा गांव में बुधवार सुबह करीब 11 बजे सड़क हादसे एक किसान घायल हो गया। युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल अजय सिंह ने बताया कि वो अपने घर से कुछ दूरी पर खेत में पानी लगाने जा रहा था। तभी पीछे से एक ट्रैक्टर ने पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही वे गिर गए और बेहोश हो गए। राहगीरों ने मुझे मेरे घर पहुंचा और फिर वहां से मेरी पत्नी मुझे लेकर जिला अस्पताल पहुंची। लोगों ने इस पूरे घटनाक्रम की सूचना पुलिस को दी। जहा जानकारी लगते ही मौके पर जमोड़ी पुलिस पहुंच गई और मामले की जांच कर रही है।

शराब पीकर घर में घुसे, बेटी के साथ छेड़खानी की

पिता ने रोका तो कुल्हाड़ी से मारा, बचाने पर पूरे परिवार से की मारपीट

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। शहर के सिविल लाइन क्षेत्र में मनचलों का शराब पीकर गुंडागर्दी करने का मामला सामने आया है। पीड़ित का कहना है कि आरोपियों ने उसके घर में घुसकर बेटी के साथ छेड़छाड़ की और रोकने पर कुल्हाड़ी, डंडों से मारा। पीड़ित परिवार जिला अस्पताल में भर्ती है।

दरअसल, बुद्ध सिंह आदिवासी मंगलवार रात जब अपने में परिवार के साथ खाना खा रहा था तभी उसके पड़ोसी दुनिया आदिवासी और आत्मा आदिवासी शराब के नशे में उसके घर में घुसे और बुद्ध सिंह की बड़ी बेटी रेखा (बदला हुआ नाम) के साथ बदतमीजी और छेड़खानी करने लगे। बुद्ध के रोकने पर दुनिया आदिवासी ने उसके सिर में कुल्हाड़ी मार दी जिससे बुद्ध सिंह अचेत होकर नीचे गिर गया।

बुद्ध सिंह को बचाने की कोशिश करने पर उसकी पत्नी बबलू (40) , बेटी रेखा (बदला हुआ नाम) (25), बेटी हेमन गुड़िया (22) को भी डंडों से पीट दिया। देर रात घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती किया गया जहां उनका उपचार जारी है।

पापा ने मना किया तो हमारे साथ मारपीट की: पीड़ित व्यक्ति बुद्ध सिंह नया चंदपुरा का रहने वाला है और फेरी लागाकर सामान बेचकर अपने परिवार का भरण पोषण करता है। उसका कहना है कि दुनिया आदिवासी और आत्मा आदिवासी जान से मारने की धमकी भी देकर गए हैं। बेटी रेखा (बदला हुआ नाम) का कहना है कि ये लोग अक्सर बदतमीजी और छेड़खानी करते हैं। रात में जब पापा ने मना किया तो इन लोगों ने हमारे साथ मारपीट की।

सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे का कहना है कि रात में घटना की जानकारी मिली थी।

अंतर्गत धारा 138 परक्राम्य लिखत अधिनियम

शारदा प्रसाद शुक्ला तनय तनय श्री रामलल्लू शुक्ल उम्र 33 वर्ष निवासी वार्ड नम्बर 46 ग्राम पोस्ट नवागांव कोठार, तहसील मनगवां, जिला रीवा (म0प्र0)

जरिये अधिवक्ता अशोक विश्वकर्मा जिला एवं सत्र न्यायालय रीवा (म0प्र0)

---नोटिसदाता/प्रथमपक्ष बनाम्

राजेश कुमार द्विवेदी तनय श्री रामसुशील द्विवेदी उम्र 38 वर्ष निवासी वार्ड नम्बर 43, हनुमान नगर चिरहुला रीवा, तहसील हुजूर, जिला रीवा (म0प्र0)

---नोटिसग्रहीता/द्वित्तीयपक्ष

नोटिस म्याद 15 दिवस

प्रथमपक्ष व आप द्वितीयपक्ष के मध्य विगत कई वर्षों से अच्छे संबंध होने से वैश्वासिक संबंध स्थापित हो गये थे। आप द्वितीयपक्ष / नोटिसग्रहीता ने अपने ऋण एवं विधिक दायित्व के भुगतान हेतु अपने बैंक यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया शाखा भलुहा जिला रीवा का चेक क्रमांक 025013 राशि 1,10,000/- रू0 (एक लाख दस हजार रू0) दिनांकित 17.09.2024 का मेरे पक्षकार को ऋण/विधिक दायित्व के अधीन जारी किया। उक्त चेक को मेरे पक्षकार ने अपने बैंक खाता पंजाब नेशनल बैंक मुख्य शाखा रीवा में प्रस्तुत करने पर दिनांक 19.09.2024 को उक्त चेक "88-CHQ UNUSAB" की टीप लगाकर लौटा दिया गया। जिससे उक्त चेक का भुगतान किये बिना लौटा दिया गया। उक्त चेक अनादरण की नोटिस नोटिसदाता द्वारा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 19.10.2024 को भेजी गई जो नोटिस आप नोटिसग्रहीता ने "प्राप्तकर्ता नहीं मिले अत: वापस" की टीप लगवाकर वापस करा दी और आप नोटिसग्रहीता ने नोटिसदाता से फोन के माध्यम से सम्पर्क कर कहा कि नवम्बर माह की 15-20 तारीख के बीच में उक्त चेक को बैंक में प्रस्तुत कर उक्त राशि प्राप्त कर लीजिएगा जिस पर दिनांक 20.11.2024 को पुन: नोटिसदाता ने उक्त चेक को अपने उक्त बैंक खाता में जमा किया जो पुन: "88-CHQ UNUSAB" की टीप दिनांक 21.11.2024 के साथ अनादरित कर वापस कर दिया गया। जो परक्राम्य लिखत अधिनियम के अधीन अपराध की श्रेणी में आता है। इस तरह आपके द्वारा दिया गया चेक बिना भुगतान के अनादृत कर दिया गया। जिससे चेक धारक को भुगतान प्राप्त नहीं हो सका। जिसकी रजिस्टर्ड विधिक सूचना जरिये रजिस्टर्ड डाक से आपको दिनांक 26.11.2024 को भेजी गई किन्तु रजिस्टर्ड डाक "प्राप्तकर्ता नहीं मिले अत: वापस" की टीप के साथ वापस भेज दी गई। अत: पुन: उक्त नोटिस जरिये समाचार पत्र आपको भेजी जा रही है। उक्त नोटिस को पढ़कर आप चेक क्रमांक 025013 में वर्णित राशि 1.10,000/-रू0 (एक लाख दस हजार रू0) का भुगतान प्रथमपक्ष को कर दें अन्यथा आपके विरुद्ध सक्षम न्यायालय में आपराधिक परिवाद लाया जायेगा।

भवदीय
अशोक विश्वकर्मा एड.

प्रशासन गांव की ओर अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें : कलेक्टर

सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों का शत प्रतिशत निराकरण सुनिश्चित करने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

''सुशासन सप्ताह-प्रशासन गांव की ओर'' अभियान 19 से 24 तक

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में कार्मिक लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय, प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग भारत सरकार के निर्देशानुसार ''सुशासन सप्ताह-प्रशासन गांव की ओर'' अभियान 19 दिसंबर से 24 दिसंबर तक चलाया जाएगा। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने जिले में अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया है। अभियान के तहत विशेष कैंप आयोजित किए जाएंगे, जिनमें केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं और सेवाओं में वंचित हितग्राहियों को लाभान्वित किया जाएगा।

कलेक्टर ने कहा कि अभियान में सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों, सीएम हेल्पलाइन तथा जनसुनवाई के प्रकरणों के निराकरण, हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ देने से संबंधित शिकायतों के निराकरण को शामिल किया गया है। साथ ही सुशासन से जुड़े लोक सेवा गारंटी अधिनियम, समाधान एक दिन, सीएम हेल्पलाइन पोर्टल तथा अन्य ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने और निराकरण के प्रयासों को भी इसमें शामिल किया गया है। कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण में अपेक्षित प्रगति नहीं होने पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर ने कहा कि अभियान के दौरान लगाए जाने वाले शिविरों में आवेदनों का शत-प्रतिशत निराकरण करें। सभी जिला स्तरीय अधिकारी अभियान के दौरान क्षेत्र का नियमित रूप से भ्रमण करें। सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण के लिए विशेष प्रयास करें। जनसुनवाई, लोक सेवा गारंटी अधिनियम तथा समाधान एक दिन में भी निराकृत प्रकरणों को पोर्टल पर दर्ज करें। विभागीय योजनाओं और सेवाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानी भी पोर्टल पर दर्ज कराएं। कलेक्टर ने कहा कि हितग्राहीमूलक योजनाओं तथा जनकल्याणकारी कार्यक्रमों से प्रतिदिन कई हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत आयोजित शिविरों में लाभान्वितों की भी जानकारी इसमें शामिल करें। कलेक्टर ने सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि अभियान का पूरी तत्परता एवं गंभीरता के साथ क्रियान्वयन किया जाए। अभियान के तहत आयोजित होने वाले शिविरों में प्राप्त आवेदनों का त्वरित निराकरण कराएं।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, कुसमी प्रिया पाठक, चुरहट शैलेश द्विवेदी तथा सभी जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

फूड इंस्पेक्टर ने मटियारी, सोनौरी और ढखरा खरीदी केंद्र का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर निप्र। जिला भर में न दिनों धान की खरीदी जोरो पर चल रही है वही रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश खाद्य नियंत्रक पीके पांडे, एसडीएम संजय जैन के मार्गदर्शक में फूड इंस्पेक्टर विनीत मिश्रा ने त्योंथर तहसील के मटियारी, ढखरा, सोनौरी खरीदी केंद्र का आकस्मिक निरीक्षण किया वहीं उपस्थित किसानों से भी वन टू वन चर्चा सरकार द्वारा मिलने वाली समस्त सुविधाओ का किसानों ने मिलने को बताया साथ ही उपस्थित किसानों ने प्रसन्नता व्यक्त की वही फूड इंस्पेक्टर ने बताया लगातार विभिन्न खरीदी केंद्रों में वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशानुसार आकस्मिक निरीक्षण किया जाता हैं साथ जहां किसी प्रकार की गड़बड़ी देखी जाती है तो तो वहां के केंद्र प्रभारी के ऊपर कड़ी से कार्यवाही की जाएगी।

विचार

बहुसंख्यकों की बात को हिन्दुओं की आवाज बताना सुनियोजित साजिश

विश्व हिन्दू परिषद के कार्यक्रम में इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश शेखर यादव द्वारा दिया गया संबोधन जज साहब के लिये गले की फांस बन गया है। दरअसल, 8 दिसंबर को प्रयागराज में विश्व हिंदू परिषद के एक कार्यक्रम में जस्टिस यादव ने समान नागरिक संहिता का समर्थन किया था। वायरल वीडियो में उन्होंने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के कार्यान्वयन का समर्थन किया और कहा कि कानूनों को बहुसंख्यकों की प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए। उन्होंने कहा,'ये कहने में बिल्कुल गुरेज नहीं है कि ये हिंदुस्तान है। हिंदुस्तान में रहने वाले बहुसंख्यकों के अनुसार ही देश चलेगा। यही कानून है। आप यह भी नहीं कह सकते कि हाई कोर्ट के जस्टिस होकर ऐसा बोल रहे हैं। कानून तो भइया बहुसंख्यक से ही चलता है। परिवार में भी देखिए,समाज में भी देखिए, जहां पर अधिक लोग होते हैं, जो कहते हैं उसी को माना जाता है। जज साहब के इस बयान पर सियासी हो-हल्ला हुआ यह तो समझ में आता है लेकिन बड़ी अदालत यदि ऐसे किसी बयान को हिन्दुओं से जोड़कर कोई कदम उठाये तो समझ से परे हैं। जज शेखर यादव ने गलत नहीं कहा था कि कानून बहुसंख्यकों की प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए। यदि जज साहब गलत हैं तो फिर हमारा लोकतंत्र कैसे सही हो सकता है,यह लोकतंत्र ही है जिसके अनुसार जब देश प्रदेश से लेकर गांवों तक में चुनाव होता है तो बहुसंख्यकों के वोट हासिल करके ही सरकार बनती है, जिसमें सभी समाज और धर्म के मतदाता शामिल होते हैं।यहां तक की कोर्ट की बहु सदस्यीय बेंच जब किसी मामले पर फैसला सुनाती है तो भी यही होता है। इसको एक उदाहरण से भी समझा जा सकता है। नवंबर 2019 में अयोध्या में प्रभु श्री राम का मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय बेंच ने बहुमत से फैसला सुनाया था।इसी को बहुसंख्यक कहा जायेगा। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने जज शेखर यादव को तलब कर लिया है। यह कॉलेजियम जिस न्यायाधीश के खिलाफ किसी विवादास्पद मुद्दे पर हाई कोर्ट से रिपोर्ट मांगती है तो उन्हें मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के समक्ष अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाता है। सुप्रीम कोर्ट के सूत्रों ने बताया कि जस्टिस शेखर कुमार यादव को न्यायिक नीति की सीमा पार करने के आरोपों के खिलाफ अपना पक्ष रखने का मौका मिल सकता है।

सांस्कृतिक संगठनों के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान को दी जा सकती है गति

प्रह्लाद सबनानी

आज पूरे देश के विभिन्न नगरों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति बहुत चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। इन नगरों में प्रतिदिन सैकड़ों/हजारों टन कचरा उत्पन्न होता है, जिसे इन नगरों की नगर पालिकाओं/नगर निगमों द्वारा एकत्र किया जाता है। कचरे की मुय श्रेणियों में जैविक अपशिष्ट, प्लास्टिक, कागज, धातु और कांच शामिल रहते हैं। कुछ नगरों में संग्रहण के पश्चात, कचरे को प्रसंस्करण संयंत्रों में भेजा जाता है, परंतु कुछ नगरों में नागरिकों की भागीदारी और कचरे के उचित निपटान की कमी एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है। इस प्रकार देश के विभिन्न नगरों में कचरा प्रबंधन एक बड़ी समस्या के रूप में विद्यमान है।

भारत में कचरे का मुख्य निपटान लैंडफिल साइटों पर किया जाता है, लेकिन यहां कचरे की सॉर्टिंग का अभाव है। अधिकांश कचरे को बिना छांटे सीधे लैंडफिल में डाला जाता है, जिससे पुनर्चक्रण की प्रक्रिया प्रभावित होती है। इसके अलावा, लैंडफिल साइट्स पर कचरे का उचित प्रबंधन नहीं किया जाता और इसका प्रदूषण मिट्टी और जल स्रोतों तक फैलता है। कुछ नगरों में कई कॉलोनियों में सीवेज का पानी खुले में बहाया जाता है। इससे जल स्रोतों का प्रदूषण होता है और जल जनित बीमारियों का खतरा बढ़ता है। खुले में सीवेज के निस्तारण से दुर्गंध और अस्वच्छ वातावरण भी उत्पन्न होता है, जिससे नागरिकों को स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कई नगरों में नागरिक अक्सर सड़कों, सार्वजनिक स्थानों, पार्कों और धार्मिक स्थलों पर कचरा फेंक देते हैं। यह शहर की स्वच्छता को प्रभावित करता है और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाता है। खासकर धार्मिक आयोजनों और प्रसाद वितरण के बाद खुले में कचरा फैलाने की आदत अधिक देखी जाती है। इससे न केवल गंदगी फैलती है, बल्कि यह धार्मिक स्थलों की पवित्रता और स्थानीय पारिस्थितिकी को भी प्रभावित करता है।

इसी प्रकार, कई नगरों में वायु प्रदूषण की समस्या तेजी से बढ़ रही है। एयर क्वालिटी इंडेक्स कई बार 200 से 300 के बीच रहता है, जो अस्वस्थ श्रेणी में आता है। इसके कारणों में प्रमुख हैं- (1) औद्योगिक प्रदूषण - विभिन्न उद्योगों से निकलने वाले वेस्ट पदार्थों का उचित निपटान नहीं होने के चलते विभिन्न उद्योग नगरों में प्रदूषण फैलाते हैं। (2) वाहनों से प्रदूषण - बढ़ते वाहनों की संख्या और पुराने वाहनों से निकलने वाले धुएं के कारण प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। (3) धूल - सड़क निर्माण और निर्माण कार्यों से निकलने वाली धूल भी वायु प्रदूषण को बढ़ाती है, जो सांस के रोगों को जन्म देती है। आज भारत में विभिन्न नगरों में स्वच्छता की समस्याओं के हल में नागरिकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गई है। नागरिकों द्वारा खुले में कचरा फेंकने, जानवरों को खुले में खाना देने और धार्मिक आयोजनों में प्रदूषण फैलाने जैसी आदतें स्वच्छता की स्थिति को और अधिक खराब करती हैं। (1) सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फेंकना - लोग अक्सर सड़कों, पार्कों और धार्मिक स्थलों पर कचरा छोड़ देते हैं। (2) जानवरों को खाना देना- नागरिकों द्वारा सड़क पर गायों और कुत्तों को खाना देना एक सामान्य प्रथा है, लेकिन इसके बाद कचरे का सही निपटान नहीं किया जाता। पन्नियां भी यदा-कदा फेंक दी जाती हैं। (3) धार्मिक आयोजनों में प्रदूषण - धार्मिक स्थानों पर पूजा सामग्री और प्रसाद के पैकेट खुले में फेंके जाते हैं, जिससे स्वच्छता की स्थिति बिगड़ती है।इसमें भंडारे वाले स्थान प्रमुखता से हैं।

हालांकि भारत सरकार द्वारा स्वच्छता के लिए पूरे देश में ही अभियान चलाया जा रहा है, परंतु इस कार्य में विभिन्न सरकारी विभागों के अतिरिक्त समाज को भी अपनी भूमिका का निर्वहन गम्भीरता से करना होगा। यदि समाज और सरकार इस क्षेत्र में मिलकर कार्य करते हैं तो सफलता निश्चित ही मिलने जा रही है। केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छ भारत अभियान के तहत विभिन्न नगरों में कई प्रयास किए गए हैं। घर-घर शौचालय का निर्माण कराया गया है एवं कचरा संग्रहण की व्यवस्था की गई है इससे कुछ हद तक स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम सफल रहे हैं, लेकिन कचरे का निपटान और सार्वजनिक स्थलों की सफाई में अभी भी सुधार की बहुत अधिक गुंजाइश है।

कुछ नगरों को तो स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत भी कई अतिरिक्त योजनाएं मिली हैं। इन योजनाओं में स्मार्ट कचरा प्रबंधन, स्मार्ट पार्किंग, और डिजिटल स्वच्छता निगरानी जैसी परियोजनाएं शामिल हैं। इन कदमों से कचरे के प्रबंधन में सुधार और स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिली है।

कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न नगरों के सामने आ रही विभिन्न समस्याओं के हल हेतु समाज द्वारा दिए गए कई सुझावों पर अमल किया जाकर भी अपने अपने नगर में स्वच्छता के अभियान को सफल बनाया जा सकता है। विभिन्न नगरों को आज स्वच्छता के लिए 3क्र के सिद्धांत को अपनाने की महती आवश्यकता है। प्लास्टिक कचरे से सड़कें बनाना का कार्य बड़े स्तर पर हाथ में लिया जा सकता है। कचरे से ऊर्जा उत्पन्न करने के सम्बंध में विभिन्न प्राजेक्ट्स हाथ में लिए जा सकते हैं। इको-फ्रेंडली शौचालयों का निर्माण भारी मात्रा में होना चाहिए। कचरे से धन उत्पन्न करने सम्बंधी योजनाओं को गति दी जा सकती है, इससे न केवल कचरा प्रबंधन में मदद मिलेगी बल्कि इन क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिलेगी। त्यौहारों के समय भारी मात्रा में बनाई जा रही भगवान की मूर्तियों का विसर्जन करते समय नगर स्तर पर स्वयसेवकों की टोलीयां बनाई जानी चाहिए जो विसर्जन सम्बंधित गतिविधियों पर अपनी पारखी नजर बनाए रखें ताकि भगवान की मूर्तियों का विसर्जन न केवल पूरे विधि विधान से सम्पन्न हो बल्कि इन मूर्तियों के अवशेष किसी भी प्रकार से कचरे का रूप न ले पायें, इसका ध्यान भी रखा जाना चाहिए।

अफ्रीकी देश रवांडा में, प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को एक घंटे के लिए पूरा देश अपने सभी कार्य रोककर सामूहिक सफाई में हिस्सा लेता है। इसे उमुगांडा कहा जाता है, और यह एक सामाजिक पहल है जिसका उद्देश्य न केवल स्वच्छता को बढ़ावा देना है, बल्कि समुदाय में एकजुटता और जिम्मेदारी की भावना को भी प्रोत्साहित करना है। इस एक घंटे के दौरान, नागरिक सार्वजनिक स्थानों, सड़कों और अन्य सामुदायिक क्षेत्रों को साफ करते हैं। यह पहल सरकार से लेकर स्कूलों के बच्चों तक सभी को शामिल करती है, और यह सामूहिक सफाई का एक बड़ा अभियान बन जाता है। उमुगांडा केवल स्वच्छता तक सीमित नहीं है; यह सामाजिक एकता और सामूहिक प्रयास को बढ़ावा देने का एक तरीका है। भारत के विभिन्न नगरों में भी इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है एवं विजयादशमी 2025 को 100 वर्ष का महान पर्व सम्पन्न होगा। संघ के स्वयंसेवक समाज में अपने विभिन्न सेवा कार्यों को समाज को साथ लेकर ही सम्पन्न करते रहे हैं। अत: इस शुभ अवसर पर, भारत के प्रत्येक जिले को, अपने स्थानीय स्तर पर समाज को विपरीत रूप से प्रभावित करती, समस्या को चिन्हित कर उसका निदान विजयादशमी 2025 तक करने का संकल्प लेकर उस समस्या को अभी से हल करने के प्रयास प्रारम्भ किए जा सकते हैं। किसी भी बड़ी समस्या को हल करने में यदि पूरा समाज ही जुड़ जाता है तो समस्या कितनी भी बड़ी एवं गम्भीर क्यों न हो, उसका समय पर निदान सम्भव हो सकता है। अत: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, एक सांस्कृतिक संगठन होने के नाते, समाज को साथ लेकर पर्यावरण में सुधार हेतु विभिन्न नगरों में स्वच्छ्ता अभियान को चलाने का लगातार प्रयास कर रहा है। इसी प्रकार, अन्य धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों को भी आगे आकर विभिन्न नगरों में इस प्रकार के अभियान चलाना चाहिए।

आरोप-प्रत्यारोप की भेंट चढ़ा संविधान पर चर्चा का सत्र

ललित गर्ग

सर्वोच्च लोकतांत्रिक सदन लोकसभा संजीदा बहस की जगह हंगामे का केंद्र बनती जा रही है, जो दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण है। जहां जनता से जुड़े मुद्दों पर सार्थक बहस की जगह शोर शराबा, हंगामा और सदन का स्थगित होना ही आम होता जा रहा है। यही बात लोकसभा में संविधान को लेकर हुई दो दिनों की बहस की चर्चा के दौरान देखने को मिली। संविधान निर्माण के 75वें वर्ष पर हुई यह चर्चा भी छिछालेदार, आरोप-प्रत्यारोप एवं उच्छृंखलता का माध्यम बनी, जबकि संविधान पर इस चर्चा से जनता को एवं देश को सही दिशा मिलनी चाहिए थी, संविधान के प्रति प्रतिबद्धता दोहरायी जानी चाहिए थी। संविधान जैसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय पर सार्थक बहस न होना लोकतंत्र को कमजोर करने एवं लोकतंत्र रूपी उजालों पर कालिख पोतना ही है। सत्तापक्ष और विपक्ष ने संविधान पर चर्चा के बहाने एक-दूसरे को कठघरे में खड़ा करने का काम करके आकाश पर पैबंद लगाने एवं सछिद्र नाव पर सवार होकर संविधान रूपी सागर की यात्रा करने का ही संकेत देकर देश की जनता को निराश ही किया है।

भले ही अपने तर्कों एवं तथ्यों से पक्ष एवं विपक्ष ने अतीत के प्रसंगों और विषयों को अधिक रेखांकित किया गया हो। निश्चित ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के अलग-अलग नजरियों को स्पष्ट करने वाली यह बहस न केवल समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर बल्कि लोकतंत्र, समाज और इतिहास से जुड़े कई महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने वाली रही, लेकिन इस बहस में आरक्षण, सावरकर, मनुस्मृति और अदाणी को शामिल करना विपक्ष की बुद्धि का दिवालियापन ही कहा जा सकता है। इनमें से अनेक प्रसंग और विषय ऐसे थे, जिन पर पहले भी किसी न किसी बहाने संसद के भीतर या बाहर चर्चा होती रही है। यह पहले से दिख रहा था कि विपक्ष संविधान पर चर्चा के बहाने यह बताने की कोशिश करेगा कि संविधान खतरे में है। लेकिन यह समझाने के लिए विपक्षी नेताओं के पास कोई मजबूत तर्क नहीं थे, वे यह स्पष्ट करने में विफल रहे कि आखिर संविधान को खतरा कैसे है? कांग्रेस संविधान पर चर्चा करते समय यह भी भूल गई कि वह यदि मोदी सरकार के एक दशक के कार्यकाल की गलतियां गिनायेगी तो उसे भी अपने चार दशकों के कार्यकाल की गलतियों हिसाब देना होगा। संविधान पर चर्चा के दौरान जैसे विपक्ष ने सत्तापक्ष पर आरोपों की झड़ी लगाई वैसे ही सत्तापक्ष ने भी विपक्ष पर आरोपों की बौछार की। लेकिन यह सब करते हुए पक्ष एवं विपक्ष ने संविधान की विशेषताओं को उजागर करने की सकारात्मकता की बजाय विध्वंसात्मक नीति का ही सहारा लिया।

जहां विपक्ष ने आरक्षण विरोधी आरोपों को दोहराते हुए कहा कि सत्ता पक्ष मूल रूप से आरक्षण की व्यवस्था के खिलाफ है और जब-तब दबे-छुपे ढंग से उसकी यह अंदरूनी इच्छा संघ और पार्टी के छोटे-बड़े नेताओं के बयानों से जाहिर होती रहती है। जवाब में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट किया कि आरक्षण की जो व्यवस्था अभी लागू है, उनकी सरकार उस पर आंच नहीं आने देगी, लेकिन धर्म के आधार पर आरक्षण देने की कोई भी कोशिश वह सफल नहीं होने देगी। जाहिर है, इसमें मतदाताओं को अपनी पाली में करने की दोनों पक्षों की कोशिश भी देखी और पहचानी जा सकती है। सत्तापक्ष और विपक्ष ने संविधान पर चर्चा के बहाने

एक-दूसरे को कठघरे में खड़ा करने का काम ईर्ष्या और मात्सर्य की भावना से किया, जो तोड़-फोड़ की नीति में विश्वास को ही बल दे रहा था। लगता है कि विपक्षी नेता यह समझने को तैयार नहीं कि लोकसभा चुनाव के समय उन्होंने संविधान के खतरे में होने का जो हौवा खड़ा किया था, वह अब असरकारी नहीं रह गया है। विपक्ष के रवैये से यही लगा कि उसे यह बुनियादी बात समझने में मुश्किल हो रही है कि जाति जनगणना कराने-न कराने से संविधान की सेहत पर क्या असर पड़ने वाला है? कांग्रेस के लिये यदि जाति जनगणना इतनी ही आवश्यक है तो नेहरू, इंदिरा, राजीव गांधी और मनमोहन सिंह के कार्यकाल में क्यों नहीं कराई गई? अच्छा होता कि कांग्रेस नेता पहले इस प्रश्न का जवाब देते और फिर जाति जनगणना की आवश्यकता रेखांकित करते। लेकिन विपक्ष एवं विशेषकर कांग्रेस ऐसे मुद्दों को उछालकर खुद ही निरुत्तर होती रही है।

पूरी बहस में महापुरुषों को घसीटने का बिंदु ऐसा था जो न केवल बहस का जायका बिगाड़ने वाला कहा जा सकता है बल्कि यह निरुद्देश्यता एवं स्तरहीनता को ही दर्शाने वाला कहा जा सकता है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को यह भी बताना चाहिए कि संविधान पर बहस करते समय सावरकर का नाम लेना और मनुस्मृति दिखाना क्यों आवश्यक हो गया था? कांग्रेस को यह समझ आ जाए तो बेहतर कि सावरकर, मनुस्मृति और अदाणी का उल्लेख करते रहने से उसे कोई राजनीतिक लाभ नहीं मिलने वाला। लोकतंत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष की तू-तू मैं-मैं चलती रहती है, लेकिन इसमें महापुरुषों को घसीटना अब बंद होना चाहिए। हमारे हर महापुरुष ने अपने समय, समाज और समझ की सीमाओं में रहते हुए कुछ ऐसा योगदान किया, जिसके लिए हम कृतज्ञ महसूस करते हैं। इसका मतलब उनके हर विचार से सहमति रखना या उनके हर कृत्य को समर्थन देना नहीं है। लेकिन उनके प्रति समाज की या उसके एक हिस्से की भी भावनाओं का सम्मान हमारी राजनीति का हिस्सा होना चाहिए।

सत्ता पक्ष ने इमरजेंसी का पुराना आरोप भी उछला, लेकिन नई बात यह रही कि इस पर बचाव की मुद्रा अपनाने के बजाय कांग्रेस इस तर्क के साथ सामने आई है कि भाजपा को भी अपनी गलतियों के लिए माफी मांगनी चाहिए। लेकिन यहां इमरजेंसी जैसी कोई भाजपा की गलती बताने में कांग्रेस नाकाम ही रही। एक और बड़ी विडम्बना यह देखने को मिली कि संविधान निर्माण को किसी दल विशेष की देन कहा गया जबकि संविधान निर्माण में सभी दलों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने विपक्ष पर विशेषतौर पर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला और कहा कि पिछले कुछ वर्षों से देश में ऐसा माहौल बनाया गया है कि संविधान एक पार्टी की विशेष देन है, जबकि वास्तविकता यह है कि संविधान के निर्माण में बहुत से लोगों की भूमिका रही है जिसे पूरी तरह से नकार दिया गया।

अपार्टमेंट में खड़ी बाइक पर लगाई आग वीडियो

बॉटल में पेट्रोल लेकर पहुंचा था बदमाश, बाइक पर डाला फिर माचिस मारकर भाग निकला

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में अपार्टमेंट की पार्किंग में खड़ी बाइक पर बदमाश युवक ने आग लगा दी। जिससे बाइक धू-धूकर जल गई। घटना का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है। जिसमें बदमाश बॉटल में पेट्रोल लेकर बाइक पर डालते दिख रहा। जिसके बाद वो माचिस से आग लगाकर भागते नजर आ रहा है। घटना सरकंडा थाना क्षेत्र की है।

सारंगढ-बिलाईगढ़ जिले के बिलाईगढ़ थाना क्षेत्र के परसाडीह निवासी शिवपाल लहरे बिलासपुर में प्राइवेट जॉब करता है। वो पिछले सात-आठ महीने से अपने दोस्तों के साथ सरकंडा क्षेत्र के मोपका स्थित रवि इन्क्लेव में किराए पर रहता है।

शनिवार को वो अपने दोस्तों के साथ रिवर व्यू की तरफ घूमने गया था। वहां से शाम पांच बजे लौटने के बाद उसने अपनी बाइक को अपार्टमेंट की पार्किंग में खड़ी किया और ऊपर फ्लैट में चला गया।

देर रात धू-धूकर जलने लगी बाइक: इस दौरान वो अपने दोस्तों के साथ ऊपर रूम में सो रहा था। देर रात करीब दो बजे अपार्टमेंट में रहने वाले एक व्यक्ति ने उसके रूम का दरवाजा खटखटाया और बताया कि उसकी बाइक में आग लग गई है। तब वह दोस्तों के साथ नीचे पार्किंग में आया। इस दौरान बाइक धू-धूकर जल रही थी। किसी तरह उन्होंने मिलकर आग बुझाया। लेकिन, तब तक बाइक पूरी तरह जलकर गई थी।

पार्किंग में खड़ी थी दर्जन भर बाइक-कार, टल गया बड़ा हादसा: जिस समय बाइक में आग लगी थी, वहां आसपास दर्जन भर बाइक और कई कारें भी खड़ी थी। आग की लपटें एक बाइक से दूसरी बाइक तक पहुंचती तो बड़ा हादसा हो सकता था। हालांकि, समय रहते युवकों को आगजनी का पता चल गया और उन्होंने बाइक पर लगी आग को काबू में कर लिया। अगर, ज्यादा देरी होती और आग फैलती तो भीषण हादसा होने की आशंका थी।

सीसीटीवी वीडियो आया सामने, आग लगाते नजर आया युवक: अपार्टमेंट की पार्किंग पर खड़ी बाइक पर आग लगाने वाले बदमाश युवक का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में एक युवक बॉटल में रखे पेट्रोल को बाइक पर डालते दिख रहा है। जिसके बाद वो माचिस निकालकर बाइक पर आग लगा रहा है। युवक की शिकायत पर पुलिस ने आगजनी का केस दर्ज कर लिया है। वहीं, सीसीटीवी वीडियो के आधार पर पुलिस बदमाश युवक की तलाश कर रही है।

अनवर ढेबर के रिश्तेदार के घर ईडी की रेड

गरियाबंद में तड़के 10 गाड़ियों में पहुंचे अफसर, रायपुर में चावल कारोबारी के घर दबिश

मीडिया ऑडीटर, गरियाबंद एजेंसी। गरियाबंद जिले के मैनपुर में ईडी ने कारोबारी इकबाल मेमन के घर छापा मारा है। टीम आज (बुधवार) सुबह 6 बजे 10 से ज्यादा गाड़ियों में कारोबारी के घर पहुंची। टीम घर में प्रॉपर्टी से जुड़े दस्तावेज खंगाल रही है।

इकबाल मेमन छत्तीसगढ़ में शराब घोटाले के आरोपी अनवर ढेबर का रिश्तेदार (मौसा) बताया जा रहा है। वहीं रायपुर के मौदहापारा में चावल कारोबारी रफीक मेमन के घर भी दबिश दी गई है।

गरियाबांद के जाड़ापदर में बनाए जा रहे राइस मिल को लेकर कुछ दिन पहले ग्रामीणों ने विरोध जताया था। ये मिल इकबाल के बेटे गुलाम द्वारा बनाई जा रही थी। विवाद बढ़ने के बाद ग्रामीणों ने ईडी के पास पहुंचकर एक लिखित शिकायत दर्ज कराई थी। ग्रामीणों ने शराब सिंडिकेट के पैसे का इन्वेस्टमेंट करने आरोप लगाया है।

मैनपुर में 2 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति खरीदी: आवेदन में आरोप था कि बेरोजगार गुलाम मेमन ने पिछले एक डेढ़ साल में मैनपुर में 2 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति खरीदी है। शिकायत में गुलाम को शराब घोटाले के आरोपी अनवर ढेबर का मौसेरा भाई बताया गया था। इसी शिकायत की पुष्टि के बाद आज ईडी की टीम ने कार्रवाई शुरू की है।

लोग बोले- शराब सिंडिकेट के पैसे का इन्वेस्टमेंट: गरियाबंद में अनवर ढेबर के कारोबारी रिश्तेदार इकबाल मेमन पर यहां के लोगों ने शराब सिंडिकेट के पैसे का इन्वेस्टमेंट करने का आरोप लगाया है, इसी शिकायत के आधार पर ईडी की टीम ने दबिश दी है।

अनवर, त्रिपाठी और टुटेजा घोटाले के मास्टर माइंड: ईडी के मुताबिक अनवर ढेबर ने आईएएस रहे अनिल टुटेजा के साथ मिलकर शराब सिंडिकेट चलाकर 2 हजार करोड़ का घोटाला किया गया। दोनों ने मिलकर पूरे घोटाले की साजिश रची। अनिल टुटेजा के प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए अनवर आबकारी विभाग में अपने पसंदीदा अधिकारियों को नियुक्त करता था। इस तरह वह वास्तविक रूप से आबकारी विभाग का मंत्री बन गया था।

2019 से 2022 तक चला भ्रष्टाचार: ईडी की जांच में पता चला है कि, शराब घोटाले में भ्रष्टाचार 2019 से 2022 के बीच चला है, जिसमें कई तरीकों से भ्रष्टाचार किया गया था।

सड़क हादसे में 4 लोगों की मौत

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में 4 अलग-अलग सड़क हादसों में 4 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 लोग घायल हो गए। ओवरटेक करते समय 2 बाइक आपस में टकरा गईं, जिससे 2 युवकों के सिर में गंभीर चोट आई है। इसके अलावा पंडरी एक्सप्रेस-वे पर 3 गाड़ियां आपस में टकरा गईं।

बताया जा रहा है कि बाइक सवार रेलवे स्टेशन की ओर जा रहे थे। इनमें से एक युवक को ट्रेन से यात्रा करनी थी, लेकिन रास्ते में ही जान चली गई। ये हादसे अभनपुर, तिल्दा और सिविल लाइन थाना क्षेत्र में हुए हैं। इसमें अभनपुर में 2 लोगों की और तिल्दा में 2 की मौत हुई है। फिलहाल पुलिस सभी मामलों की जांच कर रही है।

सड़क हादसों में 3 की मौत

ट्रक-ट्रेलर की टक्कर में 2 भाइयों ने गंवाई जान, उरगा में अज्ञात वाहन व्यक्ति को कुचला

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा में अलग-अलग सड़क हादसों में 3 लोगों की मौत हो गई। पाली थाना क्षेत्र में नेशनल हाईवे पर डुमरकछार के पास ट्रक और ट्रेलर के बीच टक्कर हो गई। हादसे में ट्रेलर ड्राइवर और हेल्पर ने दम तोड़ दिया।

बुधवार की सुबह करीब 5 बजे यह हादसा हुआ। ट्रेलर में फंसे दोनों के शवों को काफी मशक्कत के बाद बाहर निकाला जा सका।

वहीं देर रात उरगा थाना क्षेत्र में सड़क किनारे चल रहे एक व्यक्ति को अज्ञात वाहन ने चपेट में ले लिया, जिससे उसकी मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मृतक कौन है और कहां का रहने वाला है इस संबंध में जानकारी नहीं मिल सकी है।

पाली थाना क्षेत्र में हुए हादसे में बताया जा रहा है कि ओवरटेक करने के चक्कर में ट्रेलर ड्राइवर ने वाहन से नियंत्रण खो दिया। दोनों मृतक भाई थे। हादसे में ट्रक चालक भी घायल हुआ है, जिसे अस्पताल में भर्ती किया गया है।

बाइक सवारों के पास मिले 22 लाख कैश

दस्तावेज नहीं दिखा पाने पर पुलिस ने रुपए किए जब्त, 2 युवक गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में पुलिस ने नोटों से भरा बैग लेकर जा रहे दो बाइक सवारों को गिरफ्तार किया है। बैग में 22 लाख 50 हजार रुपए कैश थे। जब इस बारे में बाइक सवारों से पूछताछ की गई तो उनके पास कोई जवाब नहीं था। जिसके चलते पुलिस ने कैश जब्त कर लिया है। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है।

मंगलवार की शाम को कोतवाली पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दो लोग प्लैटिना बाइक क्रमांक सीजी 13 एम 5796 में सवार होकर इंदिरा नगर की ओर संदिग्ध परिस्थिति में जा रहे है। ऐसे में पुलिस पेट्रोलिंग के जवान तत्काल इंदिरा नगर पहुंचे और बाइक पर सवार युवकों को रोककर जांच की गई।

22 लाख कैश मिले: इस दौरान पुलिस को उसके बैग में 500-500 रुपये के 45 बंडल मिले। हर बंडल में 50 हजार रुपये थे। इस तरह उसके पास कुल 22 लाख 50 हजार रुपये मिले। पुलिस ने जब उससे पूछताछ की तो उसने इतनी बड़ी रकम के बारे में कोई उचित जवाब नहीं दिया। इसके चलते पुलिस उसे नोटों से भरे बैग के साथ कोतवाली थाने ले आई।

दोनों युवक रायगढ़ के रहने वाले: कोतवाली थाना में पुलिस ने जब उनसे पूछताछ किया, तो पता चला कि बाइक चालक रेलवे बंगलापारा निवासी गजानंद राव कातोरे (55) और उसका साथी इंदिरा नगर निवासी गजेश देवांगन (39) है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा 106 बीएनएस का अपराध कायम कर जब्त नगदी रकम के संबंध में आयकर विभाग को सूचना दिया है।

5 हजार एकड़ टाऊ की फसल बर्फ जमने से बर्बाद, कड़ाके की ठंड से जम रही ओस, बस्तर में दो दिन बारिश

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। जशपुर में बर्फ जमने से करीब पांच हजार एकड़ में लगी टाऊ की फसल बर्बाद हो गई है। पाले की परत जमने से दाने खराब हो गए हैं। बीते कुछ दिनों से रोजाना खड़ी फसल के ऊपर सुबह के वक्त बर्फ की परत जम रही है। किसानों के मुताबिक इस साल करीब 35 करोड़ रुपए की टाऊ की फसल जिले के पठारी इलाके से निकलने को तैयार थी।

छत्तीसगढ़ के उत्तरी हिस्से में कड़ाके की ठंड पड़ रही। मंगलवार को बलरामपुर सबसे ठंडा रहा, यहां न्यूनतम तापमान 3 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। हालांकि अगले तीन दिन ठंड से थोड़ी राहत मिलेगी। नमी युक्त हवा आने के कारण न्यूनतम तापमान 3 से 5 डिग्री तक बढ़ सकता है। वहीं अगले दो दिन बस्तर संभाग के जिलों में कहीं-कहीं बारिश हो सकती है।

मैनपाठ के अलावा सिर्फ जशपुर में होती है इसकी खेती: टाऊ मुख्य रूप से तिब्बत के पहाड़ी क्षेत्र की फसल है। छत्तीसगढ़ में केवल सरगुजा और जशपुर जिले में ही टाऊ की फसल ली जाती है। 1 एकड़ में 3-4 लाख रुपए के टाऊ की उपज हो सकती है। टाऊ की जानकारी कृषि विभाग को भी नहीं है कि वास्तव में टाऊ का क्या उपयोग है। वहीं मंडी की सही जानकारी किसानों को नहीं होने से बिचौलिए टाऊ फसल कटने के बाद किसानों से औने-पौने दामों में खरीद कर ले जाते हैं।

जलवायु अनुकूल, 10 साल से लगातार हो रही खेती: जशपुर की जलवायु टाऊ के लिए उपयुक्त है। टाऊ से एक किसान को प्रति एकड़ लगभग 10 हजार रुपए की आमदनी होती है। किसान टाऊ से अच्छा मुनाफा कमाते हैं। हर वर्ष जिले में टाऊ लगाने के लिए अब बड़ी संख्या में किसान आगे आने लगे हैं। इससे हर वर्ष रकबा में भी इजाफा हो रहा है।

हवा में नमी.. कहीं-कहीं होगी बारिश: मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक बंगाल की खाड़ी में एक कम दबाव का क्षेत्र बना हुआ है। इस सिस्टम के कारण आज (बुधवार) को नमी की मात्रा बढ़ेगी। इससे रायपुर समेत बस्तर संभाग में न्यूनतम तापमान में वृद्धि होगी। बस्तर में कहीं-कहीं पर हल्की बारिश भी होगी।

बंगाल में बने इस सिस्टम के असर से सोमवार की तुलना में न्यूनतम तापमान मंगलवार को दो से तीन डिग्री तक बढ़ गया है।

रायपुर में 2 डिग्री पारा बढ़ा, रात में कम हुई ठंड: यहां न्यूनतम तापमान 9.8 डिग्री और सामान्य से साढ़े चार डिग्री नीचे चला गया है। मंगलवार को रात का पारा 11.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया जो नॉर्मल से 1.1 डिग्री कम है। हालांकि 24 घंटे में करीब दो डिग्री की बढ़ोतरी हुई। इस वजह से मंगलवार को कड़ाके की ठंड से थोड़ी राहत रही। आज भी रात का पारा 13 डिग्री के आस-पास रहने की संभावना है।

999 रुपए में हवाई यात्रा कल से

रायपुर, अंबिकापुर और बिलासपुर के लिए सप्ताह में 3 दिन फ्लाइट, शेड्यूल जारी

मीडिया ऑडीटर, अंबिकापुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के तीन शहरों के बीच कल से 999 रुपए में हवाई सफर की शुरुआत होगी। रायपुर से अंबिकापुर और बिलासपुर के लिए सप्ताह में तीन दिन गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार को फ्लाइट मिलेगी। फ्लाई बिग एयरलाइंस कंपनी ने फ्लाइट्स का शेड्यूल जारी कर दिया है। अंबिकापुर एयरपोर्ट का शुभारंभ 20 अक्टूबर को पीएम नरेंद्र मोदी ने वाराणसी से वर्चुअली किया था। छत्तीसगढ़ में केन्द्र सरकार की रिजनल कनेक्टिविटी योजना के तहत रायपुर, अंबिकापुर और बिलासपुर को एयर कनेक्टिविटी से जोड़ा जा रहा है। फ्लाईबिग की ऑफिशियल साइट फ्लाइंग डोट इन पर जाकर टिकट बुकिंग की जा सकती है। हालांकि अभी फ्लाइंग की वेबसाइट पर बुकिंग शुरू नहीं हो सकी है।

सांसद आएंगे पहली फ्लाइट से: सांसद चिंतामणि महाराज 19 दिसंबर से रायपुर से अंबिकापुर आने वाली पहली फ्लाइट से आएंगे। सांसद चिंतामणि महाराज ने हवाई सेवा शुरू करने के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री और उड्डयन सचिव से मुलाकात की थी। दरिमा एयरपोर्ट को कोड (आईएटीए) अलॉट नहीं होने के कारण हवाई सेवा शुरू करने में देरी हुई। नई सेवा न केवल यात्रा के समय को कम करेगी बल्कि इंटरसिटी यात्राओं को एक आरामदायक और सुविधाजनक बनाएगी, जिससे पर्यटन, व्यापार के अवसरों और क्षेत्रीय विकास को और बढ़ावा मिलेगा। इन शहरों में पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर यात्री विमान सेवा के लिए बुकिंग करा सकते हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी एमसीबी अजय मिश्रा का भरतपुर विकासखंड दौरा

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिला शिक्षा अधिकारी एमसीबी अजय मिश्रा द्वारा 17 को विकासखंड भरतपुर का विकास खंड शिक्षा अधिकारी भरतपुर मो इस्माइल खान एवं सहायक विकासखंड अधिकारी सुदर्शन पैकरा के साथ दौरा किया गया। इसमें सबसे पहले शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माडीसरई पहुंचे वहां विद्यालय में कुछ शिक्षक विलंब से उपस्थित हुए तथा कुछ अनुपस्थित रहे उन्हें कारण बताओं नोटिस जारी करने हेतु निर्देशित किया, इसके पश्चात प्राथमिक शाला देवगढ़ एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय देवगढ़ का अवलोकन किया गया तथा उपस्थित सभी शिक्षक शिक्षिकाओं की बैठक ली गई तथा विद्यालय संचालन से संबंधित विस्तृत दिशा निर्देश दिए गए इसके पश्चात माध्यमिक शाला डोंगरीटोला का निरीक्षण किया गया वहां पर ठंड के मौसम के दृष्टिगत सभी छात्र छात्राओं को गर्म कपड़े स्वेटर का वितरण किया गया। इसके पश्चात स्वामी आत्मानंद शासकीय इंग्लिश स्कूल भरतपुर में विकासखंड भरतपुर के सभी शासकीय विद्यालयों के प्राचार्यों की बैठक ली गई तथा उन्हें बोर्ड परीक्षा में परिणाम शत प्रतिशत लाने के संबंध में एवं सभी छात्र-छात्राओं की अपार आईडी जेनरेट किए जाने के सम्बन्ध में स्कूल वार समीक्षा करते हुए 20 दिसंबर तक सभी प्राचार्यों को शत प्रतिशत अपार आईडी जेनरेट करने हेतु निर्देशित किया गया। इसके पश्चात 02 से 03 बजे तक अशासकीय विद्यालय के प्राचार्य एवं प्रधान पाठकों की बैठक ली गई तथा उन्हें भी बोर्ड परीक्षा का परिणाम एवं अपार आईडी शत प्रतिशत जनरेट किए जाने संबंधी निर्देश दिए गए।

पीरियड की बीमारी बताकर डॉक्टर ने किया रेप

कहा- सफाई हो गई, अब ठीक हो जाओगी, दोबारा क्लीनिक बुलाया तो दर्ज कराई एफआईआर

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बस्तर में डॉक्टर ने पीरियड्स की बीमारी ठीक करने के बहाने युवती से रेप किया है। डॉक्टर ने युवती से कहा था कि, तुम्हें पीरियड्स से संबंधित कोई बीमारी है। उसे बहला-फुसला कर दुष्कर्म किया। फिर कहा कि अब कोई दिक्कत नहीं, ठीक हो जाओगी। मामला कोड़ेनार थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, आरोपी डॉक्टर का नाम श्रीनिवास राव (50) है। जो कि कोड़ेनार थाना क्षेत्र के डिलमिली में प्राइवेट क्लिनिक चला रहा है। 4 दिसंबर को बस्तर के एक गांव की 19 वर्षीय युवती क्लीनिक पहुंची थी। उसने डॉक्टर को बताया था कि, उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती है। जब डॉक्टर ने उससे पूछा कि क्या मासिक धर्म आने में समस्या है, तो उसने कहा कि नियमित रूप से नहीं आता है।

क्लिनिक में ही किया रेप: जिसके बाद डॉक्टर ने उसकी ये समस्या ठीक करने का भरोसा दिलाया। उससे कहा कि सफाई करनी होगी। इसलिए दोबारा क्लीनिक बुलाया। इसके बाद सफाई के नाम पर उसका रेप किया। दुष्कर्म कर कहा कि, अब ठीक हो जाओगी। युवती काफी डर गई थी। वो अपने घर चली गई। 3 से 4 दिन बाद डॉक्टर ने उसे फोन किया। इलाज के नाम पर फिर से क्लीनिक बुलाया।

दोबारा बुलाया तो परिजनों को दी जानकारी: युवती काफी डरी हुई थी। उसने इस बारे में अपने परिजनों को बताया। जिसके बाद परिजन 15 दिसंबर को पुलिस थाने पहुंचे। डॉक्टर के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

आरोपी डॉक्टर गिरफ्तार: इस मामले में कोड़ेनार थाना प्रभारी ने कहा कि, 17 दिसंबर को आरोपी डॉक्टर श्रीनिवास राव को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि, डॉक्टर कोई एमबीबीएस नहीं था। बल्कि गांव में ही एक प्राइवेट क्लिनिक चलाता था।

सैलरी पर सट्टेबाजी, सरगना गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में पुलिस ने सट्टेबाजों के खाईवाल दिनेश टेकवानी को गिरफ्तार किया है। वो अवैध कारोबार चलाने के लिए 20 हजार रुपए सैलरी पर एजेंट रखता है। पुलिस ने उसके एक एजेंट को भी पकड़ा है। उसके पास से लैपटॉप, पांच मोबाइल, लाखों रुपए की सट्टापट्टी के साथ 8500 रुपए कैश बरामद किया है। मामला तोरवा थाना क्षेत्र का है। दरअसल, एसपी रजनेश सिंह ने सभी पुलिस अफसरों और थानेदारों को जुआ-सट्टा जैसे संगठित अपराध पर सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

सीएम बोले-पीएम के जीवन पर ग्रंथ लिखा जा सकता

भोपाल में खिलाड़ियों का समान किया, उनके बीच पहुंचकर मोहन यादव ने ली सेल्फी

भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जीवन में कई कठिनाई रही हैं। इन कठिनाईयों पर तो बहुत बड़ा ग्रंथ लिखा जा सकता है, लेकिन संकल्पों से जो उन्होंने पाया, उससे दुनिया चमत्कृत है। उन्होंने श्रेष्ठ व्यक्तित्व का प्रदर्शन किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को भोपाल के टीटी नगर में खिलाड़ियों के सम्मान समारोह में यह बात कहीं। कार्यक्रम में कुल 1786 खिलाड़ियों का सम्मान किया गया, इनमें से 1041 को खेल किट भी दी गई। मंच पर खेल मंत्री विश्वास सारंग, विधायक भगवान दास सबनानी, महापौर मालती राय, निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, बीजेपी जिलाध्यक्ष सुमित पचौरी, जिपं अध्यक्ष रामकुंवर गुर्जर, उपाध्यक्ष मोहन जाट, वक्फ बोर्ड अध्यक्ष सनवर पटेल भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रतिभा का प्रदर्शन खिलाड़ी ही अच्छे से कर सकता है। ये अलग है कि राजनीति में भी खिलाड़ी होते हैं। राजनीति भी एक खेल ही है। खेल का मतलब हार और जीत से जुड़ता है। इसमें सब प्रकार के संदेश और सार छिपे हुए हैं। किसी परीक्षा में सिलेक्शन नहीं हुआ तो आप घबराए नहीं। प्रधानमंत्री जी के जीवन से प्रेरणा लें। हमने हॉकी का वो दौर भी देखा है, जिसमें नंगे पैरों से खेलते

हुए महान खिलाड़ी ध्यानचंद ने दुनिया को चकरा दिया था। पहले भाव में आगे थे और अब प्रभाव में भी आगे हैं। किसी खेल में पुरस्कार मिले या नहीं, लेकिन पुस्तिका पदक जरूर मिलते हैं। संबोधन के बाद मुख्यमंत्री खिलाड़ियों के बीच पहुंचे और सेल्फी ली। उन्होंने कहा कि हमारे साथ तो सभी सेल्फी लेते हैं, लेकिन आपके साथ मुझे सेल्फी लेने का मौका मिल रहा है। इसके बाद डॉ. यादव खिलाड़ियों के बीच पहुंचे और फोटो खिंचवाई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मंत्री विश्वास सारंग समेत अन्य जनप्रतिनिधियों ने खिलाड़ियों को राशि के चेक भी दिए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मंत्री विश्वास सारंग समेत अन्य जनप्रतिनिधियों ने खिलाड़ियों को राशि के चेक भी दिए।

कार्यक्रम में खेल विभाग ने अब तक की उपलब्धियों पर आधारित एक शार्ट फिल्म का प्रदर्शन भी किया, जिसमें प्रदेश में खेलों के विकास और खिलाड़ियों की सफलता को दर्शाया गया। जूनियर खिलाड़ियों को खेल वृत्ति एवं खेल किट का वितरण किया गया हैं। वहीं, राज्य स्तर पर पदक विजेता प्रतिभावान जूनियर खिलाड़ियों को खेल वृत्ति और खेल किट दी गई। खेलो इंडिया सेंटर के खिलाड़ियों को किट वितरण, खेलो इंडिया कार्यक्रम के तहत चयनित खिलाड़ियों को भी खेल किट वितरित किए गए। 1 अप्रैल 2023 से वर्तमान तक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनकी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया हैं।

कभी बॉलीवुड से कॉर्पोरेट तक था जलवा, एक गलती से आज हो गए कंगाल

बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइन के मालिक विजय माल्या का आज है जन्मदिन

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनाइटेड स्पिरिट और किंगफिशर एयरलाइन के चेयरमैन रह चुके विजय माल्या का आज यानी बुधवार को जन्मदिन है। उनका जन्म 18 दिसंबर 1955 को कोलकाता में हुआ था। किंशफिशर एयरलाइन अब बंद हो चुकी है और यूनाइटेड स्पिरिट कंपनी भी बिक चुकी है। भारतीय बैंकों के 9 हजार करोड़ रुपए लेकर भागे विजय माल्या अब ब्रिटेन में हैं और भारत सरकार उनको भारत लाने के लगातार प्रयास कर रही हैं। एक समय में बॉलीवुड, खेल और कॉर्पोरेट में विजय माल्या का काफी जलवा था। 2008 में करीब 72 अरब रुपए की संपत्ति के साथ वे विश्व के 962वें सबसे धनी शख्स थे। लेकिन अब विजय माल्या सब कुछ खो चुके हैं। उनकी संपत्तियों की वसूली अभी भी चल रही है। भारत सरकार ने बताया था कि विजय माल्या से कुल 22,280 करोड़ की संपत्ति वसूली गई है।

माल्या को शराब कारोबार विरासत में अपने पिता विट्ठल माल्या से मिला था। विजय माल्या ने यूबी समूह का विस्तार किया और इसे एक बहुराष्ट्रीय संगठन बना दिया था, उनके नेतृत्व में समूह ने शराब उद्योग में महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल की थी। विजय माल्या ने भारत के बड़े संस्थानों से चुनिंदा

लोगों को अपने व्यापार में शामिल किया और शराब के कारोबार को कार्पोरेट में बदल दिया। माल्या ने भारत के अलावा विदेशों में भी कई संपत्तियां खरीदीं थी। लंदन के सबसे पॉश इलाके में एक घर है। इसे माल्या ने 180 करोड़ में खरीदा था। इंग्लैंड के हर्टफोर्डशायर में भी माल्या के पास एक हवेली है, जिसमें माल्या के बेटे ने शादी की थी। 2015 में इसे 116 करोड़ रुपए में खरीदा था। विजय माल्या ने 1986 में समीरा त्याबजी से शादी की थी, लेकिन यह रिश्ता 1987 में खत्म हो गया। इसके बाद उन्होंने 1993 में रेखा से दूसरी शादी की, जिससे उनके तीन बच्चे- सिद्धार्थ, लेयन्ना और तान्या हैं। माल्या ने 2002 और 2010 में कर्नाटक से राज्यसभा के लिए स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीता था। विजय माल्या ने 2003 में किंगफिशर एयरलाइंस की शुरुआत की थी। वह इस एयरलाइंस को सबसे बड़ा ब्रांड बनाने चाहते थे। किंगफिशर को सबसे बड़ी एयरलाइंस बनाने के लिए उन्होंने 2007 में एयर डेक्कन को 1200 करोड़ रुपए में टेकओवर किया था। उनका यह फैसला ही उन्हें ले डूबा।

माल्या को इसका फायदा तो मिला और 2011 में किंगफिशर देश की दूसरी सबसे बड़ी एविएशन कंपनी बन गई, लेकिन बाद में एयर डेक्कन को लेकर माल्या यह तय नहीं कर पाए कि उसका संचालन किस तरीके से किया जाए। कंपनी लगातार घाटे में चलती रही। एयर डेक्कन तो डूबी ही साथ ही किंगफिशर को भी ले डूबी। एयरलाइंस को चलाने के लिए विजय माल्या ने बहुत ज्यादा कर्ज ले लिया।

महंगाई की मार झेल रहे गरीबों के लिए राहत की योजनाएं चलाए सरकार

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती ने विधानसभा सत्र में सरकार से गरीबी के लिए राहत की योजनाएं चलाने की अपील की है। साथ ही उन्होंने कहा कि अगर ऐसा होता है तो ये प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ का बड़ा उपहार होगा। मायावती ने बुधवार को एक्स के जरिए पोस्ट में लिखा कि यूपी में भी गरीबी, बेरोजगारी व महंगाई से त्रस्त लोगों के हितों में यहां चल रहे विधानसभा सत्र में सरकार को कुछ ऐसी योजनाएं शुरू करना चाहिए जिससे इनको राहत मिले। उन्होंने आगे कहा कि ऐसा किए जाने पर फिर सरकार का यहां प्रयागराज के महाकुंभ का इनके लिए बहुत बड़ा उपहार होगा। इससे फिर इनको कुछ हद तक राहत मिलेगी। गौरतलब है कि प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन बड़े स्तर पर हो रहा है। इस बार महाकुंभ की शुरुआत 13 जनवरी से होगी। इसका समापन 26 फरवरी को

होगा। महाकुंभ का विशेष महत्व है, क्योंकि प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन होता है। हर 12 साल में विशेष रूप से चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में यह आयोजित किया जाता है। धार्मिक मान्यता के मुताबिक इस आयोजन में पवित्र नदियों में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

राजनाथ सिंह ने कहा- रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को राजधानी में विभागीय परामर्शदात्री समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसे संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री ने विश्वास के साथ कहा कि पूर्व में मौजूद आयुध फैक्ट्री बोर्ड (ओएफबी) के निगमीकरण के बाद गठित किए गए नए रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (डीपीएसयू) रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाएंगे। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि बैठक में समिति के कुछ सदस्यों ने डीपीएसयू में मानव संसाधन से जुड़े हुए मुद्दों पर जाहिर की गई चिंताओं और सुझावों पर राजनाथ सिंह ने आश्वासन के साथ कहा कि निगमीकरण से उत्पन्न हुए तमाम मुद्दों को सभी हितधारकों से

जरूरी परामर्श के साथ उचित रूप से संबोधित किया जा रहा है। सुझावों की सराहना करते हुए उन्होंने क्रियान्वयन के लिए इनकी जांच करने की बात भी कही। बैठक में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, सीडीएस जनरल अनिल चौहान, रक्षा उत्पादन सचिव संजीव कुमार सहित मंत्रालय के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। मंत्रालय के मुताबिक, इस बैठक में निगमीकरण के बाद डीपीएसयू की भूमिका और कार्यों पर चर्चा की गई। समिति के सदस्यों को वित्तीय आंकड़ों, आधुनिकीकरण, पूंजीगत व्यय, निर्यात, विकसित किए गए नए उत्पादों और वर्तमान में जारी अनुसंधान और विकास परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

फ्रांस में चिडो से मची तबाही पर पीएम मोदी ने जताया दुख, मदद की पेशकश की

राष्ट्रपति मैक्रों ने जताया आभार कहा- आपके विचारों और समर्थन के लिए धन्यवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस के मायोट में आए विनाशकारी तूफान चिडो ने तबाही मचा दी है जिस पर भारत के पीएम नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है। साथ ही उन्होंने हरसंभव मदद की पेशकश की है। पीएम मोदी की संवेदनाओं पर राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने आभार जताया है। बता दें चिडो एक विनाशकारी तूफान था, जिसने शनिवार को फ्रांसीसी द्वीप समूह मायोट में भयंकर तबाही मचाई। चक्रवात चिडो 90 से ज्यादा सालों में मायोट में आने वाला सबसे शक्तिशाली तूफान था। प्रलयकारी हवाओं ने आसपास के क्षेत्रों को भी तहस-नहस कर दिया है। बिजली के ग्रिड नष्ट हो गए और अस्पतालों, स्कूलों और हवाई अड्डे के नियंत्रण टॉवर सहित महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को काफी नुकसान पहुंचाया। पीएम मोदी ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मायोट में चक्रवात चिडो के कारण हुई तबाही से वह बहुत दुखी हैं। उनकी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यकीन है कि राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के नेतृत्व में, फ्रांस इस त्रासदी को दृढ़ संकल्प के साथ दूर करेगा।

भारत फ्रांस के साथ खड़ा है और हर संभव सहायता देने के लिए तैयार है। पीएम मोदी के संदेश का जवाब देते हुए राष्ट्रपति मैक्रों ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा- प्रिय नरेंद्र मोदी, आपके विचारों और समर्थन के लिए धन्यवाद। श्रेणी-4 के तूफान, चक्रवात चिडो ने सप्ताहांत में दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर में तबाही मचा दी है।

चक्रवात ने 3 लाख से ज्यादा लोगों को प्रभावित किया है। उत्तरी मोजाम्बिक में भी भारी तबाही हुई ह। फ्रांस के पीएम ने एक बैठक में टिप्पणी की कि हर कोई समझता है कि यह एक ऐसा चक्रवात था जो अप्रत्याशित रूप से विनाशकारी था। चक्रवात से होने वाली मौतों की संख्या चौंका देने वाली है। मीडिया रिपोर्ट में शुरुआती रिपोर्टों ने 11 मौतों की पुष्टि की, लेकिन बचाव प्रयासों के जारी रहने के कारण संख्या बढ़ने की उम्मीद है। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेड क्रॉस एंड रेड क्रिसेंट सोसाइटीज ने मायोट में अपने 200 से ज्यादा स्वयंसेवकों के लापता होने पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि चक्रवात चिडो के कारण 220 किमी/घंटा तक की हवाओं ने फ्रांसीसी विदेशी क्षेत्र मायोट को तबाह कर दिया है। यह आशंका है कि 200 से ज्यादा स्वयंसेवक लापता हैं।

राजस्थान के करौली में न्यूनतम तापमान 1.3 डिग्री सेल्सियस, कश्मीर में जम गए जलाशय

35 सबसे ठंडे शहरों में से 10 मध्य प्रदेश के

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में इनदिनों कड़ाके की ठंड पड़ रही है। राजस्थान,पंजाब, मध्य प्रदेश और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में तापमान न्यूनतम स्तर पर पहुंच चुका है। कई इलाकों में शीतलहर का कहर जारी है, जबकि दक्षिणी राज्यों में बारिश का अलर्ट है। जहां राजस्थान के करौली में न्यूनतम तापमान 1.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सीकर और उदयपुर सहित कई जगहों पर गाड़ियों पर बर्फ जम गई।

अगले 4-5 दिन यहां ठंड और शीतलहर जारी रहेगी। वहीं पंजाब के फरीदकोट में पहली बार रात का तापमान 0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अबोहर में पारा 0.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पूरे राज्य में औसत तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। वहीं देश के उत्तर भाग में जम्मू-कश्मीर में ठंड का

प्रकोप चरम पर है। श्रीनगर में डल झील के साथ कई जलाशय जमने लगे हैं। बारामूला के तंगमर्ग में 30 मीटर ऊंचा द्रंग झरना ठंड के कारण जम गया है। इस बार देश के मध्य में स्थित मध्यप्रदेश में भी सर्दी नए आयाम स्थापित कर रही है। देश के 35 सबसे ठंडे शहरों में से 10 मध्य प्रदेश के हैं। पचमढ़ी में तापमान 1.6 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया है। भोपाल में न्यूनतम तापमान 4 डिग्री सेल्सियस रहा, जहां लगातार चौथे दिन शीतलहर चली। यह दिसंबर में एक नया रिकॉर्ड है। वहीं दूसरी ओर देश के दक्षिण भाग में तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल और पुडुचेरी में अगले 3 दिनों तक भारी बारिश की संभावना है। आंध्र प्रदेश के तटीय इलाकों में 45-55 किमी/घंटा की रफ्तार से तेज हवा चल सकती है।

19 दिसंबर को राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में शीतलहर जारी रहेगी। वहीं तमिलनाडु, पुडुचेरी, आंध्र और केरल में बिजली चमकने के साथ भारी बारिश होगी। 20 दिसंबर को ओडिशा और दक्षिण भारत में बारिश की संभावना। राजस्थान में घना कोहरा और शीतलहर का अनुमान। हिमाचल और पंजाब में पाला पड़ने की संभावना है। 21 दिसंबर को पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में शीतलहर। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में बारिश और तेज हवाओं का अनुमान।

शाह ने किया ऐलान- भाजपा शासित राज्यों में लागू करेंगे यूसीसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने ऐलान करते हुए कहा जहां-जहां भाजपा की सरकार, उन राज्यों में यूसीसी लागू होगी। उत्तराखंड द्वारा लागू की गई समान नागरिक संहिता एक आदर्श कानून है, जिस पर व्यापक बहस होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इसके बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकारें सभी राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू करेंगी।

उन्होंने कांग्रेस पर संविधान का अपमान करने और तुष्टिकरण की राजनीति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हम लोकतांत्रिक तरीके से काम करते हैं। एक ऐसा कानून जिसे सामाजिक जीवन में बड़े बदलाव लाने वाला माना जाता है, उसे उत्तराखंड ने आदर्श कानून के रूप

में पारित किया। यह कानूनी और धार्मिक प्रमुखों द्वारा समीक्षा किया जाएगा और उसके बाद भाजपा सरकारें सभी राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू करेंगी। उन्होंने आगे कहा कि अब तक यह कानून लागू नहीं हो सका, इसका कारण कांग्रेस की तुष्टिकरण की राजनीति है। राज्यसभा में संविधान के 75वें वर्ष पर चल रही बहस के दौरान, अमित शाह ने कांग्रेस और भाजपा द्वारा किए गए संविधान संशोधनों के बीच तुलना करते हुए यह दावा किया कि कांग्रेस ने निजी लाभ और सत्ता की खातिर संविधान में बदलाव किए, जबकि भाजपा ने लोकतंत्र को मजबूत करने और समान अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए संशोधन किए। 85 मिनट के अपने भाषण में शाह ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने कभी आरक्षण का सम्मान नहीं किया और 50 प्रतिशत की सीमा को तोड़ने का प्रयास किया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार समान नागरिक संहिता के पक्ष में अपने विचार रखे हैं और भाजपा ने इस मुद्दे को झारखंड विधानसभा चुनावों में प्रमुख चुनावी वादा बनाया था।

संक्षिप्त समाचार

बुमराह और आकाश दीप ने फॉलोऑन टाला

ब्रिस्बेन (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में अपनी पहली पारी में 252 रनों पर ही आउट हो गयी। वहीं मेजबान ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अपनी पहली पारी में 445 रन बनाये थे। इस प्रकार भारतीय टीम बमुश्किल फॉलोऑन से बच सकी है। आज चौथे दिन केएल राहुल 84 और रविन्द्र जडेजा 77 को छोड़कर टीम के प्रमुख बल्लेबाज विफल रहे। अंत में जसप्रीत बुमराह और आकाशदीप सिंह ने 39 रन की साझेदारी कर भारतीय टीम को फॉलोऑन से बचाया। भारतीय टीम को फॉलोऑन से बचने के लिए 246 रनों की जरुरत थी। आज सुबह तीसरे दिन के 4 विकेट 51 रन के से आगे खेलते हुए भारतीय टीम को राहुल और कप्तान रोहित शर्मा ने आगे बढ़ाने का प्रयास किया। रोहित एक बार फिर असफल रहे और 10 रन बनाकर ही पेवेलियन लौट गये। रोहित के आउट होने के समय तक भारतीय टीम को का स्कोर 74 रन था। इस प्रकार आधी टीम 74 रनों पर ही पेवेलियन लौट गयी। इसके बाद टीम को फॉलोऑन से बचाने के लिए राहुल के अलावा जडेजा ने भी अर्धशतक लगाकर अहम भूमिका निभाई। इन दोनों ने 67 रन की साझेदारी कर टीम को 141 रन तक पहुंचाया। तभी राहुल आउट हुए। नीतीश कुमार रेड्डी ने 16 रन बनाकर टीम को 194 रन तक पहुंचाया। अंत में बुमराह और आकाशदीप ने जरुरी 33 रन बनाकर पारी को फॉलोआन से बचाया। भारत ने एक समय 7 विकेट पर 194 रन ही बनाये थे। उस समय जडेजा और नीतीश क्रीज पर थे पर तभी ऑस्ट्रेलिया ने तेजी से 3 विकेट लेकर भारतीय टीम के 9 विकेट 213 रनों पर ही गिरा दिये। ऐसे में बुमराह और आकाश दीप की जोड़ी ने किसी प्रकार टीम को संभालकर फॉलोऑन बचाने के लिए जरुरी रन बनाये। बुमराह और आकाश दीप ने मिलकर 39 रन बनाए। इससे टीम का स्कोर 9 विकेट पर 252 रन हो गया। इसी स्कोर पर दिन का खेल समाप्त घोषित कर दिया।

सोने और चांदी के भाव में गिरावट

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोना-चांदी कीमतो में बुधवार गिरावट देखी जा रही है। बुधवार को सोना और चांदी के वायदा भाव में गिरावट आई है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का भाव 0.16 फीसदी की गिरावट के साथ 76,750 रुपए जबकि चांदी 0.30 फीसदी गिरकर 90,606 रुपए पर कारोबार कर रही है। शादी-विवाह के सीजन की मांग को पूरा करने के लिए आभूषण विक्रेताओं की मौजूदा स्तर पर ताजा लिवाली से मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने की कीमतों में उछाल आया और यह 950 रुपए बढ़कर 79,300 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी। इसके अलावा अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दो दिन की बैठक मंगलवार को शुरू हो रही है। फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय से अगले साल सोने के समग्र प्रदर्शन पर असर पड़ सकता है। 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने की कीमत सोमवार को 78,350 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी।

रविचंद्रन अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कहा, छोड़ी शानदार विरासत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के बेहतरीन स्पिनरों में से एक रविचंद्रन अश्विन ने बुधवार को इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने का ऐलान किया। उन्होंने यह घोषणा गाबा टेस्ट के ड्रॉ होने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कप्तान रोहित शर्मा के साथ की। अश्विन का यह कदम भारतीय क्रिकेट जगत के लिए एक युग का अंत है, क्योंकि उनके करियर में किए गए अद्वितीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। प्रेस कॉन्फ्रेंस में अश्विन ने कहा, मेरा समय यहीं खत्म होता है। इसके बाद, उन्होंने बिना किसी सवाल के चले जाने का फैसला लिया, जिससे यह संकेत मिला कि उनका यह कदम पूरी तरह से विचारशील था। अश्विन ने अपने करियर में कुल 106 टेस्ट मैच खेले और इनमें 537 विकेट झटके। इसके अलावा, उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 3503 रन भी बनाए। टेस्ट क्रिकेट में अश्विन का योगदान बेजोड़ रहा है और वह भारतीय क्रिकेट के सबसे प्रभावशाली स्पिनरों में से एक माने जाते हैं। 200 पारियों में उन्होंने 8 बार 10 या उससे अधिक विकेट हासिल किए, जबकि 25 पारियों में पांच विकेट हॉल भी लिया। वह भारतीय टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में अनिल कुंबले के बाद दूसरे स्थान पर हैं। इसके अलावा, अश्विन ने 116 वनडे मैचों में 156 विकेट और 65 टी20 इंटरनेशनल में 62 विकेट लिए। उनके नाम टेस्ट क्रिकेट में छह शतक भी दर्ज हैं, जो उनकी बैटिंग क्षमता को भी दर्शाते हैं। अश्विन की रणनीतिक समझ और क्रिकेट की गहरी समझ ने उन्हें भारतीय टीम का अहम हिस्सा बनाया। वह भारतीय क्रिकेट के सबसे स्मार्ट खिलाड़ियों में से एक माने जाते हैं और उनके दृष्टिकोण और योजनाओं को क्रिकेट के सबसे बड़े दिग्गजों ने भी सराहा है। उन्होंने कहा, मैंने अपनी यात्रा के दौरान बहुत मजा लिया। रोहित शर्मा और अन्य साथी खिलाड़ियों के साथ ढेर सारी यादें बनाई। हालांकि, हमने उनमें से कुछ को (रिटायरमेंट के कारण) खो दिया है। अश्विन ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट बोर्ड का भी धन्यवाद किया। उन्होंने अपनी क्रिकेट यात्रा के समापन के दौरान कहा कि उन्होंने क्रिकेट को अपनी शर्तों पर खेला और वह पूरी तरह से संतुष्ट हैं। रविचंद्रन अश्विन के बड़े रिकॉर्ड, जिन्हें तोड़ना मुश्किल हैं। भारत के लिए टेस्ट में सबसे तेज 300 विकेट का रिकॉर्ड रविचंद्रन अश्विन के नाम है।

उन्होंने यह कारनामा 54 मैचों में किया था। श्रीलंका के खिलाफ 2017 में यह उपबलब्धि अश्विन ने हासिल की थी। रविचंद्रन अश्विन भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले दूसरे गेंदबाज हैं। उन्होंने 106 टेस्ट में 537 विकेट झटके हैं। भारत के लिए एक पारी में सबसे ज्यादा बार 5 विकेट का रिकॉर्ड भी रविचंद्रन अश्विन के नाम है। उन्होंने यह कारनामा 37 बार किया है। सबसे ज्यादा प्लेयर ऑफ द सीरीज के अवॉर्ड टेस्ट में रविचंद्रन अश्विन में श्रीलंका के दिग्गज मुथैया मुरलीधरन के बराबरी की हुई है। दोनों ने 11 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज का अवॉर्ड जीता है। स्पिनर का बेस्ट बॉलिंग स्ट्राइक रेट टेस्ट में (200 प्लस विकेट) रविचंद्रन अश्विन के नाम है। उनका स्ट्राइक रेट 50.7 का है।

हेजलवुड फिर चोटिल हुए, पूरी सीरीज से बाहर होने की आशंका

ब्रिस्बेन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड चोटिल हो गये है और उनके बॉर्डर-गावस्कर से ही बाहर होने की आशंकाएं जाहिर की जा रही हैं। हेजलवुड का बाहर होना मेजबान टीम के लिए करारा झटका है। हेजलवुड को सुबह अभ्यास के दौरान दाएं पैर की पिंडली में खिंचाव आ गया था। जिसकी स्कैन जांच में भी पुष्टि हुई है। हेजलवुड इसी कारण चौथे दिन के पहले सत्र में केवल एक ओवर ही फेंक पाये थे। इसके बाद दर्द बढ़ने के कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा था। जांच में उनकी चोट गंभीर पायी गयी है। । क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने अपने एक बयान में कहा, हेजलवुड की दाईं पिंडली में खिंचाव आया है। इस वजह से वह भारत के खिलाफ ब्रिस्बेन टेस्ट में आगे नहीं खेल पाएंगे। उनके बाकी सीरीज से बाहर होने की भी संभावनाएं हैं। हेजलवुड की गैरमौजूदगी में एक बार फिर स्कॉट बोलैंड को अवसर मिल सकता है। बोलैंड हेजलवुड की तीसरे टेस्ट में वापसी से पहले टीम में शामिल थे। हेजलवुड साइड स्ट्रेन के कारण दूसरे टेस्ट से भी बाहर थे।

हेजलवुड इससे पहले अगस्त में भी इसी प्रकार की पिंडली की चोट से पीड़ित रहे हैं, जिसके कारण ही वह स्कॉटलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज नहीं खेल पाए थे पर इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबलों में उन्होंने भाग लिया था। अभी दोनो ही टीमें सीरीज में 1-1 से बराबरी पर है। दोनों टीमें इस सीरीज को जीतकर आगामी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्लयूटीसी) फाइनल के लिए जगह बनाना चाहेंगी। लॉर्ड्स में होने वाले वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में जगह बनाने की कोशिश में जुटी हैं।

शेयर बाजार रही गिरावट, सेंसेक्स 80 अंक फिसला, निफ्टी 24,300 के नीचे

मुंबई (एजेंसी)। घरेलू शेयर बाजार बुधवार के कारोबारी दिन एक बार फिर लाल निशान में खुले। दोनों ही प्रमुख बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में शुरुआती कारोबार के दौरान गिरावट देखी गई। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की तरफ से ब्याज दर में कटौती के बारे में टिप्पणी से पहले विदेशी निवेशक जोखिम लेने से बच रहे हैं और अमेरिकी शेयरों में निवेश के चलते भारतीय इक्विटी बेच रहे हैं। ऐसे में किसी भी प्रमुख घरेलू ट्रिगर के अभाव में घरेलू बाजारों में भी दबाव देखने को मिल रहा है। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स बुधवार को मामूली गिरावट के साथ 80,666.26 अंक पर खुला। पिछले कारोबारी दिन यह 80,684.45 के स्तर पर बंद हुआ था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी गिरावट लेकर 24,300 के नीचे खुला। बाद में इसमें गिरावट बढ़ गई और 9 =30 बजे यह 40.80 अंक तक फिसल गया। बाजार के जानकारों का मानना है कि दिन के आखिरी में अमेरिकी केंद्रीय बैंक के नीतिगत निर्णय से पहले निवेशक सतर्क रुख अपना रहे हैं। निवेशक ब्याज दरों में 25 बेसिस पॉइंट की कटौती का अनुमान लगा रहे हैं। हालांकि, निवेशकों का ज्यादा ध्यान इस बात पर रहेगा कि फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल बैठक के बाद क्या कहते हैं। वहीं मंगलवार को बेंचमार्क इक्विटी इंडेक्स बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी 50 में तेज बिकवाली देखी गई। तीस शेयरों वाला सेंसेक्स 1,064.12 अंक गिरकर 80,684.45 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 50 332.25 अंक या 1.35 प्रतिशत की गिरावट के साथ 24,336 पर बंद हुआ।

मैल्कम मार्शल जैसे गेंदबाज नजर आते हैं बुमराह : बॉर्डर

ब्रिस्बेन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट कप्तान एलन बॉर्डर ने भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि वह वेस्टइंडीज के महान तेज गेंदबाज मैल्कम मार्शल से की है। बॉर्डर ने कहा कि उन्होंने बुमराह जैसा कोई गेंदबाज नहीं देखा है। वह ऐसे गेंदबाज हैं जिन्हें हमेशा विकेट मिलता है। साल 2024 में अपने बेहतरीन प्रदर्शन को जारी रखते हुए बुमराह ऑस्ट्रेलिया में कपिल देव के बाद 50 टेस्ट विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज हैं।

ऑस्ट्रेलिया में कम से कम 20 विकेट लेने वाले किसी भी गेंदबाज का औसत बुमराह की तरह 17.82 का नहीं रहा है। बॉर्डर ने कहा, मैं उनकी तुलना मार्शल से ठीक से नहीं कर सकता क्योंकि मैंने कभी बुमराह का सामना नहीं किया पर उन्हें देखकर लगता है कि दोनों में बहुत अंतर नहीं है। बुमराह असाधारण हैं। वह शायद ही कभी विकेट लिए बिना कोई स्पैल फेंकते हैं। वह अलग हैं। उन्होंने कहा, अपने एक्शन की वजह से, वह गेंद को बाद में छोड़ देते हैं। और वह हर समय मुस्कुराते रहते हैं। वह लगातार तीन बार बल्लेबाज को चकमा दे सकते हैं और हर बार मुस्कुराते हैं। मैंने उनके जैसा कोई नहीं देखा। बुमराह के नाम ऑस्ट्रेलिया में तीन बार पांच विकेट लेने की उपलब्धि है। भारतीय गेंदबाजों में केवल कपिल ने ही ऑस्ट्रेलिया में पांच बार पारी में पांच विकेट लिए हैं। वहीं अनिल कुंबले ऑस्ट्रेलियाई धरती पर चार बार पांच विकेट के साथ सूची में दूसरे स्थान पर हैं। टेस्ट क्रिकेट में बुमराह का यह 12वां और दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में आठवां पांच विकेट हॉल था। ऐसा करने वाले वह पहले भारतीय हैं। बुमराह ने कपिल का रिकॉर्ड तोड़ा, जो 7 बार पांच विकेट लेकर इस सूची में दूसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलियाई धरती पर 50 विकेट के साथ बुमराह अब ऑस्ट्रेलिया में कपिल के 51 विकेट के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं। वह बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के एक संस्करण में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड भी तोड़ने की राह पर हैं।

सैमी वेस्टइंडीज की टेस्ट टीम के भी कोच बने

अप्रैल में संभालेंगे पद

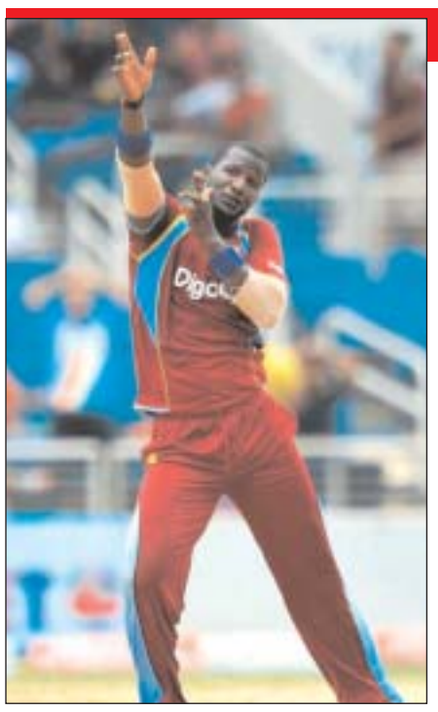

जमैका (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के पूर्व कप्तान डेरेन सैमी अब टेस्ट टीम के भी कोच होंगे। अभी तक वह एकदिवसीय और टी20 में ही कोच थे पर अब उन्हें तीनो प्रारुपों के लिए कोच बनाया गया है। सैमी अगले साल अप्रैल में कोच पद संभालेंगे। सैमी ने वेस्टइंडीज की ओर से 232 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। उनकी कप्तानी में वेस्टइंडीज ने दो बार टी20 विश्व कप जीता है। अब बोर्ड ने उन्हें तीनों प्रारुपों में कोच की जिम्मेदारी दी है। सैमी को 2023 में सीमित ओवरों की क्रिकेट टीम में कोच बनाया गया था। सैमी को तब आंद्रे कोल की जगह एकदिवीसय और टी20 टीम का कोच बनाया गया था। इससे पहले सैमी लाल गेंद क्रिकेट में वेस्टइंडीज टीम के अंतरिम कोच थे। सैमी ने बतौर कोच जून में यूएई के खिलाफ एकदिवसय में पहली बार कोचिंग की। विंडीज के पूर्व विकेटकीपर कूले ने पिछले साल जुलाई में भारत के खिलाफ घरेलू सीरीज में अंतिम बार कोचिंग की थी। सैमी के मार्गदर्शन में वेस्टइंडीजी ने सफेद गेंद क्रिकेट में यूएई के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज जीती थी जबकि बांग्लादेश और इंग्लैंड के खिलाफ भी उसे जीत मिली थी। इसके बावजूद टीम विश्वकप क्वालीफायर के फाइनल में जगह नहीं बना पाई थी। टीम पिछले काफी समय से एक भी टेस्ट सीरीज नहीं जीत सकी है। उसे भारत, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में हार मिली। वहीं उसने ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश से ड्रॉ खेला। उसका टेस्ट में सबसे अच्छा प्रदर्शन जनवरी 2024 में आया। तब उसने ने ऑस्ट्रेलिया को गाबा में हराया था। वेस्टइंडीज ने 2023-25 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप साइकिल में 11 में से सिर्फ 2 टेस्ट मैच जीते जबकि 7 में उसे हार मिली। डब्ल्यूटीसी पॉइंट टेबल में वेस्टइंडीज सबसे निचले स्थान पर है।

रोहित शर्मा ऊर्जा और इरादे अडिग रखकर हासिल करें फार्म : हेडन

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर मैथ्यू हेडन ने फार्म हासिल करने के लिए भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा को दो अहम सलाह दी है। हेडन ने कहा कि रोहित को दबाव में ऊर्जा और अपने इरादे अडिग रखने चाहिये। इसके लिए उन्हें क्रीज पर शांत और स्थिर रहना होगा। हेडन ने कहा कि जब मैं रोहित के बारे में सोचता हूं तो मैं तेजी से रन बनाने वाले बल्लेबाज के बारे में सोचता हूं। आप एक दिवसीय क्रिकेट में दोहरे शतकों को देखकर उनकी क्षमताओं का आंकलन कर सकते हैं। रोहित पिछले कुछ समय से खराब फार्म से गुजर रहे हैं। बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में वह रन नहीं बना पाये। अपनी पिछली 12 पारियों में वह 11.83 के बेहद कम औसत से एक अर्धशतक के साथ ही केवल 142 रन बना पाये हैं। हेडन ने कहा कि रक्षात्मक रवैया अपनाने से रोहित को लाभ नहीं होगा क्योंकि आक्रामक रवैया और सकारात्मक रुख ही उनकी ताकत है। उन्होंने साथ ही कहा कि जब मैं लंबे समय के बाद यहां एडिलेड के पहले गेम के बारे में सोचता हूं, तो वह थोड़ा सुस्त नजर आया था। मैं उसे अपने साथी के रूप में कहूंगा। मैं आपको यहां गेंद का बचाव करते हुए नहीं देखना चाहता। मैं चाहता हूं कि वह वास्तव में आक्रामक रुख अपनाते हुए गेंद के पीछे जाएं। अगर वह अपना स्वाभाविक खेल खेलेंगे तो अच्छा होगा। हेडन ने जोर देकर कहा कि रोहित को अपनी तैयारी के तरीकों को बढ़ाने और अपनी बल्लेबाजी फॉर्म को फिर से खोजने के लिए दो अहम बातों इरादे और ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है।

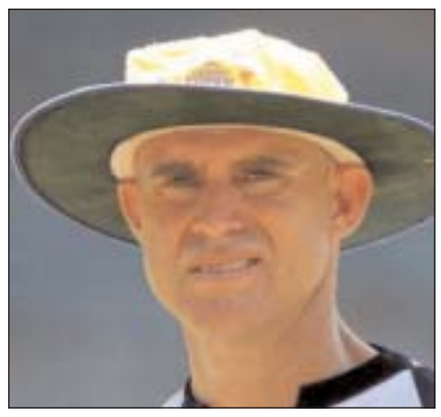

यशस्वी की जगह राहुल पारी शुरु करते हुए पहली गेंद खेले : सुनिल गावस्कर

गाबा (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि केएल राहुल को पारी की शुरुआत के दौरान पहले स्ट्राइक लेनी चाहिए। गावस्कर के अनुसार अब तक जिस प्रकार से युवा यशस्वी जायसवाल खेले हैं। उसे देखकर लगाता है कि वह पहले गेंद खेलने में सहज अनुभव नहीं करते। गावस्कर ने कहा कि अब तक यशस्वी दो बार पहले ही ओवर में आउट हुए हैं। पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में शतक लगाने वाले जयसवाल दूसरे और तीसरे टेस्ट के दौरान शुरुआत में ही आउट हो गए थे। दूसरे टेस्ट की पहली पारी में मिचेल स्टार्क ने पारी की पहली ही गेंद पर जयसवाल का विकेट लिया था। इसके अलावा तीसरे टेस्ट में भी वह पहली ही गेंद पर आउट हो गये। पूर्व कप्तान के अनुसार लगता है पहली गेंद इस युवा के लिए एक अजीब होती है। तो शायद उसे दूसरी गेंद देनी चाहिए। हम देख चुके हैं कि वह स्ट्राइक लेते हुए पहले ही ओवर में दो बार आऊट हो चुका है। ऐसे में राहुल को चाहिए कि वह पहली गेंद का सामना करे गावस्कर ने इसके अलावा भारतीय बल्लेबाजों को सलाह दी कि वे बल्लेबाजी करते समय स्कोरबोर्ड की जगह पर घड़ी पर नजर डालें क्योंकि भारतीय टीम ने तीसरे टेस्ट में 15 ओवर के अंदर ही 4 विकेट खो दिए थे। वहीं बल्लेबाज विराट कोहली और रोहित शर्मा सहित शीर्ष बल्लेबाज शुरुआत में ही पेवेलियन लौट गये थे। गावस्कर ने कहा कि हां, स्कोरबोर्ड को मत देखो। बस घड़ी को देखो और बस वहां पहुंच जाओ। यही वह चीज है जहां मैं दोपहर के भोजन के समय रहना चाहता हूं। यह आपको व्यवस्थित होने के लिए थोड़ा समय देता है। आपको पता चलता है कि पिच कैसी है। दूसरी गेंद जो आप खेल रहे हैं, वह भी नहीं है।

बल्लेबाजी रैंकिंग में मंधाना तीसरे स्थान पर पहुंची

दुबई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के खिलाफ अच्छे प्रदर्शन की बदौलत भारतीय उप-कप्तान स्मृति मंधाना अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की महिला एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में तीन स्थान के फायदे से दूसरे स्थान पर, वहीं टी20 अंतरराष्ट्रीय बल्लेबाजी रैंकिंग में एक स्थान के फायदे से तीसरे स्थान पर पहुंच गईं। मंधाना ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ में एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के अंतिम मैच में 105 रन की पारी खेली जबकि वेस्टइंडीज के खिलाफ रविवार को मुंबई में पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 54 रन बनाए।

मंधाना एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष 10 में एकमात्र भारतीय हैं। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर दो स्थान के नुकसान से 13वें जबकि हरलीन देओल नौ स्थान के फायदे से 64वें स्थान पर हैं। गेंदबाजी रैंकिंग में दीप्ति शर्मा दो स्थान के नुकसान से पांचवें पायदान पर हैं। भारतीय तेज गेंदबाज अरुंधति रेड्डी 48 स्थान की लंबी छलांग के साथ 51वें स्थान पर पहुंच गई हैं जबकि रेणुका ठाकुर 28वें से संयुक्त 26वें स्थान पर पहुंच गई हैं। इंग्लैंड की सलामी बल्लेबाज टैमी ब्यूमोंट दो स्थान के फायदे से 11 स्थान पर हैं। उन्होंने नाबाद 65 रन की पारी खेलकर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला 2-1 से जीतने में अहम भूमिका निभाई थी। पर्थ में 50 रन बनाने वाली एशलेग गार्डनर 16वें से 15वें स्थान पर पहुंच गई हैं जबकि ताहलिया मैकग्रा आठ स्थान के फायदे से 24वें स्थान पर हैं। अनाबेल सदरलैंड 15 स्थान के फायदे से 29वें पायदान पर हैं। उन्होंने भारत के खिलाफ 110 रन की मैच विजयी पारी खेली थी। गार्डनर गेंदबाजी रैंकिंग में भी दो स्थान के फायदे से तीसरे स्थान पर हैं जो उनके करियर की पिछली सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग भी है। वह ऑलराउंडर की सूची में भी चौथे से दूसरे पायदान पर पहुंच गई हैं। दक्षिण अफ्रीका की मारिजेन कैप दो स्थान के फायदे से चौथे स्थान पर हैं जबकि इंग्लैंड की चार्ली डीन (दो स्थान के फायदे से सातवें स्थान पर), नैट स्किवर ब्रंट (एक स्थान के फायदे से 16वें स्थान पर) और लॉरेन बेल (चार स्थान के फायदे से 21वें स्थान पर) की तिकड़ी को भी फायदा हुआ है। दूसरी तरफ टी20 अंतरराष्ट्रीय बल्लेबाजी रैंकिंग में हरमनप्रीत की शीर्ष 10 में वापसी हुई है। जेमिमा वेस्टइंडीज के खिलाफ 73 रन की पारी खेलकर छह स्थान के फायदे से 15वें स्थान पर हैं। गेंदबाजी रैंकिंग में दीप्ति दो स्थान के फायदे से दूसरे पायदान पर हैं जबकि टिटास साधु 52वें स्थान पर पहुंच गई हैं। वेस्टइंडीज की ऑलराउंडर डिएंड्रा डॉटिन भारत के खिलाफ अर्धशतक जड़ने के बाद 21 स्थान के फायदे से 59वें पायदान पर हैं।

विभागीय उपलब्धियों तथा प्रकरणों के निराकरण की जानकारी पोर्टल में दर्ज करें - मुख्य सचिव

मुख्य सचिव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से दिए प्रशासन गांव की ओर अभियान के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रदेश के मुख्य सचिव अनुराग जैन ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से संभाग के कमिश्नर, कलेक्टर तथा अन्य अधिकारियों को प्रशासन गांव की ओर अभियान के संबंध में निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कहा कि अभियान 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान सीएम हेल्पलाइन प्रकरण, राजस्व महाभियान में प्रकरणों के निराकरण, जन सुनवाई तथा जन शिकायत के प्रकरणों का निराकरण करके भारत सरकार के पोर्टल पर दर्ज कराएं। इस अवधि में विभागीय उपलब्धियों, हितग्राही मूलक योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानियाँ तथा जनकल्याण के कार्यों को भी पोर्टल में दर्ज कराएं। पोर्टल में सभी जिलों से प्रकरणों के निराकरण के संबंध में तथ्यपरक रिपोर्ट दर्ज करें।

मुख्य सचिव ने कहा कि भारत सरकार के निर्देशों के अनुरूप चलाए जा रहे प्रशासन गांव की ओर अभियान के 8 प्रमुख बिन्दु हैं। इनमें सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों, सीएम हेल्पलाइन तथा जनसुनवाई के प्रकरणों के निराकरण, हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ देने से संबंधित शिकायतों के निराकरण को शामिल किया गया है। साथ ही सुशासन से जुड़े लोक सेवा गारंटी अभियान, समाधान एक दिन, सीएम हेल्पलाइन पोर्टल तथा अन्य ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने और निराकरण के प्रयासों को भी इसमें शामिल किया गया है। पोर्टल पर विभिन्न योजनाओं और विभागीय सेवाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानियाँ, जिलों के विजन डाक्यूमेंट, प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो में कलेक्टर के सोशल मीडिया एकाउंट से दर्ज विभागीय उपलब्धियों को शामिल किया गया है। अभियान के दौरान सीपी ग्राम की सभी शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित करें। मुख्य सचिव ने कहा कि मध्यप्रदेश सुशासन के क्षेत्र में कार्य करने वाला अग्रणी राज्य है। प्रतिदिन औसतन 40 हजार से अधिक प्रकरणों का निराकरण किया जाता है। प्रकरणों की जानकारी पोर्टल पर दर्ज करना सुनिश्चित करें। जिन जिलों में विजन डॉक्यूमेंट तैयार हो गया है वे भी इसे उपलब्ध करा दें। अभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। इसमें भी प्रतिदिन लगाए जा रहे शिविरों में लाभान्वित हितग्राहियों की जानकारी पोर्टल पर दर्ज कराएं। सुशासन के सभी बिन्दुओं पर कार्यवाही करके ऑनलाइन रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने कहा कि मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के साथ प्रशासन गांव की ओर शिविर लगाए जाएंगे। इसके लिए जिलेवार कार्यक्रम निर्धारित कर लिया गया है। इन शिविरों में संभागीय और जिला स्तर के अधिकारी भी शामिल होंगे। सभी पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ देने का प्रयास किया जाएगा। अभियान के लिए सभी जिलों में नोडल अधिकारी तैनात कर दिए गए हैं। लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर कार्यालय से सीसीएफ राजेश राय, मुख्य अभियंता लोक निर्माण संजय खाण्डे तथा संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से कलेक्टर प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सपना त्रिपाठी तथा सभी जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

सीएम हेल्पलाइन की नवम्बर की शिकायतों का जल्द करें निराकरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने गूगल मीट के माध्यम से सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी सीएम हेल्पलाइन में लंबित नवम्बर माह की शिकायतों का दो दिन में अनिवार्य रूप से निराकरण करें। राजस्व, महिला एवं बाल विकास विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग तथा लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारी सभी शिकायतों का निराकरण करके 19 दिसम्बर को शाम 5 बजे तक अनिवार्य रूप से प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। साथ ही 20 और 21 दिसम्बर को 50 दिन से अधिक की शिकायतों का निराकरण कराएं। शिकायतों को संतुष्टिपूर्वक निराकृत करने का प्रयास करें। माँग आधारित शिकायतों के प्रतिवेदन 19 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे तक जिला प्रबंधक लोक सेवा गारंटी को अनिवार्य रूप से उपलब्ध करा दें। विभागों की ग्रेडिंग में सुधार न होने पर कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी सिरमौर की एक वेतनवृद्धि अवरूद्ध करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने कहा कि सभी एसडीएम अपने अनुभाग की राजस्व विभाग सहित विभिन्न विभागों की शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित करें। मुख्य कार्यपालन अधिकारी त्योंथर, जवा तथा गंगेव प्राथमिकता से शिकायतें निराकृत करें। सभी बीएमओ एवं परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास शिकायतों के निराकरण के साथ-साथ 70 साल से अधिक आयु के व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनानें में तेजी लाएं। बैठक में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला, कार्यपालन यंत्री पीएचई संजय पाण्डेय, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास प्रतिभा पाण्डेय शामिल रहीं। सभी एसडीएम, तहसीलदार, जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा अन्य विभागों के अधिकारी गूगल मीट के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

जनकल्याण के कार्यों को पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज कराने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय में आयोजित बैठक में रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने अधिकारियों को प्रशासन गांव की ओर के संबंध में निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि अभियान के दौरान लगाए जाने वाले शिविरों में आवेदनों का शत-प्रतिशत निराकरण करें। सभी संभागीय और जिला स्तरीय अधिकारी अभियान के दौरान क्षेत्र का नियमित रूप से भ्रमण करें। सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण के लिए विशेष प्रयास करें। जनसुनवाई, लोक सेवा गारंटी अधिनियम तथा समाधान एक दिन में भी निराकृत प्रकरणों को पोर्टल पर दर्ज करें। विभागीय योजनाओं और सेवाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की सफलता की कहानी भी पोर्टल पर दर्ज कराएं।

कमिश्नर ने कहा कि हितग्राहीमूलक योजनाओं तथा कल्याणकारी कार्यक्रमों से प्रतिदिन हजारों हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं। प्रशासन गांव की ओर अभियान 19 से 24 दिसम्बर तक चलाया जा रहा है। इस अवधि में दिव्यांगों की सहायता, पेंशन प्रकरण, खाद्यान्न वितरण, छात्रवृत्ति वितरण सहित विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की जानकारी पोर्टल पर दर्ज कराएं। सीएम हेल्पलाइन तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त आमजनता के आवेदन पत्रों पर तत्परता से कार्यवाही करके उनकी जानकारी पोर्टल पर दर्ज करें। प्रत्येक जिले में कलेक्टर तथा अन्य सभी अधिकारी पोर्टल पर जानकारियाँ अपलोड करने के लिए अधिकारी तथा कर्मचारी तैनात करें। निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर, दिव्यांगों के स्वास्थ्य परीक्षण शिविर तथा अन्य विभागीय शिविरों से लाभान्वित हितग्राहियों की भी जानकारी पोर्टल में दर्ज करें। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत आयोजित शिविरों में लाभान्वितों की भी जानकारी इसमें शामिल करें। अभियान के दौरान संभागीय और जिला स्तरीय अधिकारी अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण भी अनिवार्य रूप से करें। अभियान के दौरान संभागीय और जिला स्तरीय अधिकारियों के दल गांव का भ्रमण करके विभागीय योजनाओं के हितलाभों का वितरण करेंगे। बैठक में सीसीएफ राजेश कुमार राय, चीफ इंजीनियर लोक निर्माण विभाग संजय खाण्डे, चीफ इंजीनियर विद्युत मण्डल आईके त्रिपाठी, संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास ऊषा सिंह सोलंकी, उपायुक्त दिव्या त्रिपाठी, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ केएल नामदेव, अधीक्षण यंत्री ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, सहायक संचालक उद्यानिकी तथा अन्य संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने बालिका छात्रावास का किया निरीक्षण, छात्रावास की बालिका ने कलेक्टर से कहा कि

मैं कलेक्टर बनूंगी और सबका न्याय करूंगी...

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत कलेक्टर प्रतिभा पाल ने ग्राम उमरी में सुभाषचन्द्र बोस बालिका छात्रावास का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने बच्चों से पठन-पाठन की व्यवस्था, भोजन तथा आवास की व्यवस्था के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने छात्राओं से संवाद करते हुए कहा कि सभी बेटियाँ अच्छे से अपनी पढ़ाई पूरी करें और अच्छा कॅरियर बनाएं। आपकी पढ़ाई में किसी तरह की कमी नहीं रहने दी जाएगी। कलेक्टर ने छात्राओं से उनके भविष्य के संबंध में जिज्ञासावश प्रश्न किए। कक्षा छठवीं की छात्रा ने कहा कि वह शिक्षक बनेगी। एक अन्य छात्रा ने पुलिस अधिकारी बनने की बात कही। कक्षा सातवीं की छात्रा ने कहा कि मैं कलेक्टर बनूंगी और सबका न्याय करूंगी। कलेक्टर ने छात्रा के दृढ़ निश्चय की प्रसंशा करते हुए कहा कि अपना लक्ष्य तय करें और उसे पूरा करने के लिए लगन के साथ पढ़ाई करें तो सब कुछ बनना संभव है।

कलेक्टर ने छात्रावास के छात्राओं के कक्ष, भोजन कक्ष एवं भण्डार का निरीक्षण किया। छात्राओं के कमरे में समुचित प्रकाश न होने पर नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर ने छात्रावास के समीप स्थित स्कूल में तीन दिन में गणित और अंग्रेजी के शिक्षक की व्यवस्था करने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को दिए। छात्रावास में समुचित व्यवस्थाएं न होने पर बीआरसी और अधीक्षिका छात्रावास को कारण बताओ नोटिस देने के निर्देश दिए। निरीक्षण के समय एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता, बीआरसी, शिक्षकगण तथा छात्राएं उपस्थित रहीं।

कलेक्टर ने धान खरीदी बंद पाए जाने पर जारी किया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने दीपक वेयरहाउस पड़रिया में बनाए गए धान खरीदी केन्द्र में किसानों से धान की खरीदी बंद पाए जाने पर समिति प्रबंधक, केन्द्र प्रभारी और गोदाम संचालक को नोटिस जारी किया है। नोटिस का जवाब तीन दिनों के अंदर न देने पर इनके विरूद्ध एक पय कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने जारी नोटिस में कहा है कि दीपक वेयरहाउस पड़रिया में सेवा सहकारी समिति बरहदी क्रमांक दो को धान खरीदी केन्द्र बनाया गया है। नायब तहसीलदार वृत्त मनिकवार द्वारा 17 दिसम्बर को धान खरीदी केन्द्र का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान धान खरीदी बंद पाई गई। कारण पूछे जाने पर बताया गया कि केन्द्र प्रभारी और गोदाम मालिक के बीच विवाद होने के कारण धान खरीदी का कार्य बंद है। निरीक्षण के दौरान समिति प्रबंधक और केन्द्र प्रभारी अनुपस्थित पाए गए। कलेक्टर ने जारी नोटिस में कहा है कि किसानों के लिए शासन की अति महत्वाकां योजना समर्थन मूल्य पर खरीदी के कार्य को आपसी विवाद के कारण बंद किया गया, जो कि अत्यंत उदासीन, लापरवाही और घोर आपत्तिजनक है। कलेक्टर ने इस कृत्य को शासन द्वारा जारी उपार्जन नीति एवं वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों की स्पष्ट अवहेलना मानते हुए समिति प्रबंधक, केन्द्र प्रभारी और गोदाम संचालक को नोटिस जारी किया है।

सुशासन सप्ताह के लिए नोडल अधिकारी तैनात

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशों के अनुसार 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक सुशासन सप्ताह एवं प्रशासन गांव की ओर अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत 20 से 22 दिसम्बर तक विकासखण्ड स्तर एवं ग्राम पंचायत स्तर पर शिविर लगाए जाएंगे। जिला स्तर पर 23 से 25 दिसम्बर तक शिविरों का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने सुशासन सप्ताह के लिए नोडल अधिकारी तैनात किए हैं। शिविरों के आयोजन तथा विभागों में समन्वय के लिए परियोजना अधिकारी जिला पंचायत डॉ संजय सिंह को नोडल अधिकारी बनाया गया है। सुशासन सप्ताह में प्रतिदिन आवेदनों के निराकरण की प्रगति तथा अन्य जानकारियाँ पोर्टल पर दर्ज करने के लिए जिला सूचना विज्ञान अधिकारी मनीष पटेल को नोडल अधिकारी बनाया गया है। सुशासन सप्ताह की गतिविधियों के सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रचार-प्रसार के लिए प्रभारी उप संचालक उमेश तिवारी को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

जिले भर में जनकल्याण अभियान के लगाये जा रहे हैं शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पात्र हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ देने के लिए जिले भर में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले के सभी विकासखण्डों में ग्राम पंचायतवार शिविर लगाये जा रहे हैं। इन शिविरों में शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है साथ ही पात्र हितग्राहियों से आवेदन भरवाकर उन्हें हितलाभ का वितरण किया जा रहा है। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि जनकल्याण अभियान के तहत 20, 21 और 22 दिसंबर को शिविर लगाये जायेंगे। कलेक्टर ने बताया कि अनुभाग रायपुर कर्चुलियान में 20 दिसंबर को ग्राम पंचायत भलुहा, सिरखिनी तथा ऐतला तथा 21 दिसंबर को बरहदी, बुड़वा, बरेही में शिविर लगाये जायेंगे। इसी तरह 22 दिसंबर को रायपुर कर्चुलियान, खीरा तथा पटना में शिविर लगेंगे। अनुभाग हुजूर में 20 दिसंबर को ग्राम पंचायत कुल्लू तथा हर्दी, 21 दिसंबर को पैपखरा 385 एवं लपटा और 22 दिसंबर को बम्हौरी तथा सांव में शिविर लगेंगे। अनुभाग जवा में 20 दिसंबर को ग्राम गोहटा तथा गाड़ा 137, 21 दिसंबर को ग्राम पंचायत अंदवा और पतेरी तथा 22 दिसंबर को ग्राम पंचायत खम्हरिया 34 और खारा में शिविर लगेंगे। अनुभाग मनगवां में 20 दिसंबर को ग्राम पंचायत धवेया, कठेरी, 21 दिसंबर को गंगेव और सिरसा एवं 22 दिसंबर को जरहा और गोदरी 10 में शिविर लगाये जायेंगे। इसी तरह अनुभाग त्योंथर में ग्राम पंचायत 20 दिसंबर को ग्राम पंचायत कैथी पचकठा और महुली, 21 दिसंबर को बीना कोठार और कोटराकला तथा 22 दिसंबर को मनिका और लखवार में शिविर लगाये जायेंगे। अनुभाग सिरमौर में 20 दिसंबर को ग्राम पंचायत उमरी और खैरहन, 21 दिसंबर को पल्हान और डोल तथा 22 दिसंबर को मऊ और महरी में शिविर लगाये जायेंगे। कलेक्टर ने आमजनता से इन शिविरों से लाभ उठाने की अपील की है।

नगर निगम में सामुदायिक भवन कटरा तिराहा में आज लगेगा शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत रीवा नगर निगम क्षेत्र में जनकल्याण शिविरों का लगातार आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में आमजनता को विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के साथ पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। इस संबंध में आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े ने बताया कि 19 दिसम्बर को वार्ड क्रमांक 20 और 21 के लिए सामुदायिक भवन कटरा तिराहा में जनकल्याण शिविर लगाया जा रहा है। आमजनता से शिविर से लाभ उठाने की अपील की गई है।

युवा महोत्सव संबंधी बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा जिला तथा संभाग स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसकी तैयारी बैठक 19 दिसम्बर को दोपहर 12.30 बजे से कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल युवा उत्सव की तैयारियों की विभागवार समीक्षा करेंगी। खेल अधिकारी एमके धौलपुरी ने सभी संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

दिशा समिति की बैठक अब 23 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सांसद जनार्दन मिश्र की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा) की चतुर्थ त्रैमास बैठक अब 23 दिसम्बर को दोपहर 3.30 बजे से आयोजित की जायेगी। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री आवास, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क विकास, विद्युत मण्डल अंतर्गत आरडीएसएस योजना, 70 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाने, मुद्रा/अटल जीवन ज्योति योजना तथा रमसा के तहत कराए जाने वाले कार्यों की समीक्षा की जाएगी। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं।

जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक 19 दिसम्बर को दोपहर बाद 3.30 बजे से कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित की गई है। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर प्रतिभा पाल करेंगी। बैठक में सभी हितग्राहीमूलक योजनाओं के प्रकरणों के निराकरण तथा ऋण वितरण की समीक्षा की जाएगी। बैठक में जिले के ऋण-जमा अनुपात, बैंकों की वसूली, किसान क्रेडिट कार्ड, कृषि क्षेत्र में निवेश तथा बैंकों की विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाएगी। अग्रणी बैंक प्रबंधक जगमोहन ने सभी संबंधित अधिकारियों तथा बैंक शाखा प्रबंधकों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।